E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.adhuniksamachar.com

आधुनिक समाचार

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

12th ANNIVERSARY

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

वर्ष -12 अंक - 74 | प्रयागराज, शुक्रवार 29 मई, 2026 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 3.00 रूपये

ट्रम्प बोले-ईरान डील करना चाहता है,लेकिन हम संतुष्ट नहीं, समझौते का ड्राफ्ट तैयार-तेहरान, अमेरिका ने फर्जी बताया

वॉशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा है कि ईरान समझौता करना

चाहता है, लेकिन अमेरिका अभी प्रस्तावित डील से संतुष्ट नहीं है। व्हाइट हाउस में कैबिनेट बैठक के दौरान ट्रम्प ने कहा- 'ईरानी नेता बहुत ज्यादा डील करना चाहते हैं, लेकिन अब तक बात वहां तक नहीं पहुंची है। हम अभी संतुष्ट नहीं हैं, लेकिन हो जाएंगे।' उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि या तो समझौता होगा, नहीं तो हमें काम पूरा करना होगा। इस बीच ईरानी सरकारी मीडिया ने दावा किया कि अमेरिका और ईरान के बीच समझौते का शुरुआती खाका तैयार हो गया है। रिपोर्ट में कहा गया कि प्रस्तावित समझौते के तहत अमेरिका खाड़ी क्षेत्र से अपनी सैन्य मौजूदगी कम करेगा और नौसैनिक घेराबंदी हटाएगा। इसके बदले होर्मुज स्ट्रेट में व्यावसायिक जहाजों की आवाजाही 30 दिनों में सामान्य स्तर पर लौटेगी। हालांकि व्हाइट हाउस ने इन दावों को खारिज करते हुए कहा कि ईरानी मीडिया की रिपोर्ट पूरी तरह मनगढ़ंत है और ऐसा कोई औपचारिक समझौता मौजूद नहीं है। पिछले 24 घंटे के 4 बड़े अपडेट्स- अमेरिकी ड्रोन गिराया- ईरान ने दावा किया कि उसकी फोर्स ने अमेरिकी एमक्यू एम-9बी और आरक्यू-4 ड्रोन को निशाना बनाया। साथ ही ईरानी हवाई क्षेत्र में घुसे एफ-35 लड़ाकू विमान पर भी फायरिंग की गई। 88 दिन बाद इंटरनेट बहाल- ईरान में 88 दिनों बाद इंटरनेट सेवाएं आंशिक रूप से बहाल हुईं। नेटब्लॉक्स ने इसे आधुनिक इतिहास का सबसे लंबा राष्ट्रीय इंटरनेट ब्लैकआउट बताया, जिससे कारोबार और डिजिटल सेवाएं प्रभावित रहीं। नेतन्याहू की अधिकारियों के साथ बैठक- इजराइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने रक्षा अधिकारियों के साथ सुरक्षा बैठक की। इसमें उत्तरी सीमा और लेबनान के हालात पर चर्चा हुई, जबकि हिजबुल्लाह के ठिकानों पर हमले तेज किए गए। ईरानी बोट्स पर हमला- अमेरिका ने सीजफायर पर बातचीत के बीच होर्मुज स्ट्रेट के पास बारूदी सुरंग बिछा रही बोट्स और बंदर अब्बास के मिसाइल ठिकानों पर हमला किया। सेंटकॉम ने इसे आत्मरक्षा की कार्रवाई बताया।

सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम ने केंद्र को 5 नाम भेजे,चार हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस,एक वरिष्ठ महिला वकील

नयी दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम ने सुप्रीम कोर्ट में जज नियुक्त करने के लिए पांच नामों

की सिफारिश केंद्र सरकार को भेजी है। इनमें चार हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश और एक वरिष्ठ महिला वकील शामिल हैं। कॉलेजियम ने पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस शील नागू, बॉम्बे हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस श्री चंद्रशेखर, मध्य प्रदेश हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस संजीव सचदेवा, जम्मू-कश्मीर और लद्दाख हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस अरुण पल्ली और वरिष्ठ अधिवक्ता वी मोहना के नाम भेज हैं। यह सिफारिश 22 और 27 मई को हुई कॉलेजियम बैठकों के दौरान की गई हैं। वरिष्ठ अधिवक्ता वी मोहना की नियुक्ति से सुप्रीम कोर्ट में महिलाओं की भागीदारी मजबूत होने की उम्मीद जताई जा रही है। फिलहाल सुप्रीम कोर्ट में सिर्फ एक महिला जज जस्टिस बीवी नागरत्ना हैं। अगस्त 2021 के बाद से किसी महिला की सुप्रीम कोर्ट में नियुक्ति नहीं हुई है। अभी सुप्रीम कोर्ट में 32 जज हैं। जून में जस्टिस जेके माहेश्वरी और जस्टिस पंकज मित्तल के रिटायर होने के बाद दो और पद खाली हो जाएंगे। केंद्रीय कैबिनेट ने 5 मई को सुप्रीम कोर्ट में जजों की संख्या 33 से बढ़ाकर 37 करने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। सरकार संसद के अगले सत्र में इससे जुड़ा विधेयक पेश करेगी। बिनेट की मंजूरी के बाद 1956 के कानून में संशोधन किया जाएगा। संविधान के अनुच्छेद 124(1) के तहत सुप्रीम कोर्ट में जजों की संख्या बढ़ाने का अधिकार संसद के पास है। कानून लागू होने के बाद सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम नए जजों के नाम सरकार को भेजेगा। सुप्रीम कोर्ट में इस समय 92,385 पेंडिंग मामले हैं। कोविड के बाद ई-फाइलिंग बढ़ने से मामलों की संख्या लगातार बढ़ी है। केंद्र सरकार ने 11 दिसंबर 2025 को राज्यसभा में बताया था कि देशभर के कोर्ट में कुल 5.49 करोड़ से अधिक केस पेंडिंग हैं। इसमें 90,897 मामले सुप्रीम कोर्ट और देश के 25 हाई कोर्ट में 63,63,406 मामले लंबित थे।

खालिस्तान समर्थक ने भारतीय उच्चायुक्त का काफिला रोका,गाड़ी के सामने फाड़ा तिरंगा, पैरों से रौंदने की करि कोशिश,पुलिस ने खदेड़ा

जालंधर। कनाडा में एक बार फिर खालिस्तान समर्थकों ने भारत विरोधी हरकत की है। प्रतिबंधित संगठन सिख फॉर जस्टिस से जुड़े

खालिस्तानी कार्यकर्ता इंदरजीत सिंह गोसल ने कनाडा में भारतीय उच्चायुक्त दिनेश पटनायक का काफिला रोक दिया। इतना ही नहीं, खालिस्तानी समर्थक ने पुलिस घेरा तोड़कर उनके सामने भारतीय तिरंगे को फाड़ दिया और उसे पैरों तले रौंदने की कोशिश की। इस दौरान प्रदर्शनकारियों ने भारत विरोधी नारे लगाए। साथ ही उसने आरोप लगाया कि पटनायक ने उसकी हत्या की सुपारी दी है। इस घटना का एक वीडियो भी सामने आया है, जिसमें खालिस्तानी समर्थक की पूरी हरकत दिख रही है। इस घटना के बाद कनाडा सरकार की सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल उठ रहे हैं। यह घटना 26 मई को तब हुई जब वैंकूवर में भारतीय उच्चायुक्त दिनेश पटनायक काफिला के साथ एक कार्यक्रम में जा रहे थे। उनके कार्यक्रम की जानकारी खालिस्तानियों को पहले से थी, इसलिए वे प्रदर्शन करने के लिए पहले ही जमा हो गए थे। जैसे ही उन्होंने उच्चायुक्त के काफिले को देखा तो इनमें से एक इंदरजीत सिंह गोसल सुरक्षा घेरा तोड़कर गाड़ियों के सामने आ गया। उच्चायुक्त पटनायक की गाड़ी के सामने खड़े होकर गोसल ने भारतीय ध्वज को फाड़ दिया और उसे पैरों तले रौंदने की कोशिश की। इस दौरान वहां मौजूद भीड़ ने भारतीय आतंकवादी वापस जाओ के भड़काऊ नारे लगाए। प्रदर्शनकारी लगातार हरदीप सिंह निज्जर की हत्या का मुद्दा उठा रहे थे और चिल्ला रहे थे कि निज्जर को किसने मारा? भारतीय सरकार ने। इंदरजीत सिंह गोसल वही शख्स है जिसे कनाडाई पुलिस ने हाल ही में थ्रेट टू लाइफ के तहत गवाह सुरक्षा की पेशकश की थी। तिरंगा फाड़ने के बाद अपने कृत्य को सही ठहराते हुए गोसल ने एक गंभीर आरोप लगाया। उसने कहा कि उसने भारतीय झंडा इसलिए फाड़ा क्योंकि पटनायक ने उसे जान से मारने के लिए किसी को 50,000 डॉलर की सुपारी दी थी।इस पूरी घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद भारतीय समुदाय और राजनयिक हलकों में भारी आक्रोश है।

आगे की खबर पेज संख्या 07 पर...

मंगोलिया भेजे गए बुद्ध के शिष्यों के अस्थि कलश,सांची में दिया गया गार्ड ऑफ ऑनर',24 घंटे सशस्त्र सुरक्षा घेरा

रायसेन। विश्व प्रसिद्ध बौद्ध तीर्थ सांची में रखे भगवान गौतम बुद्ध के परम शिष्यों (अर्हन्त सारिपुत्र और अर्हन्त महामोग्गलान) के पवित्र अस्थि कलश 28 मई को मंगोलिया के लिए रवाना हुआ। यह दूसरा मौका है जब इन पवित्र अवशेषों को दर्शनार्थ विदेश भेजा जा रहा है इससे पहले इन्हें थाईलैंड भेजा गया था। इस यात्रा से भारत और मंगोलिया के धार्मिक व सांस्कृतिक संबंध मजबूत होने और सांची में विदेशी पर्यटकों की संख्या बढ़ने की उम्मीद है। बुधवार सुबह 7 बजे चैतन्यगिरि विहार मंदिर के मुख्य तहखाने से 13 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल की मौजूदगी में अस्थि कलश बाहर निकाले गए। लगभग एक घंटे तक बौद्ध भिक्षुओं ने मंत्रोच्चार और विशेष पूजा-अर्चना की। सुबह 9 बजे सशस्त्र सुरक्षा बलों ने पवित्र अवशेषों को गार्ड ऑफ ऑनर दिया। इसके बाद अस्थि कलशों को बुलेटप्रूफ और शॉक-प्रूफ विशेष बॉक्स में सील कर कड़ी सुरक्षा के बीच सड़क मार्ग से भोपाल एयरपोर्ट के लिए रवाना किया गया। रायसेन एसडीएम मनीष शर्मा ने बताया कि एएसआई और केंद्र सरकार की तकनीकी टीम ने पहले ही अस्थि कलशों का वैज्ञानिक

परीक्षण, सत्यापन और नाप-तौल की प्रक्रिया पूरी कर ली थी। पूरा मिशन 'सोवरेन गारंटी' प्रोटोकॉल के तहत संचालित किया जा रहा है। भोपाल से दिल्ली, फिर मंगोलिया भेजे जाएंगे अवशेष- भोपाल एयरपोर्ट पर विदाई समारोह आयोजित होगा। यहां से विशेष विमान के जरिए अवशेषों को दिल्ली स्थित राष्ट्रीय संग्रहालय भेजा जाएगा। तकनीकी प्रक्रिया पूरी होने के बाद इन्हें मंगोलिया रवाना किया जाएगा। मंगोलिया की राजधानी उलानबटार स्थित गंडन तेगचेनलिंग मठ में इन पवित्र अस्थि कलशों को श्रद्धालुओं के दर्शनार्थ रखा जाएगा। 1809 में स्थापित यह मठ मंगोलिया का प्रमुख बौद्ध केंद्र माना जाता है। तिब्बती शैली में बने इस मठ में 26 मीटर ऊंची स्वर्णमंडित अवलोकितेश्वर प्रतिमा स्थापित है। ऐसा होता है पवित्र अवशेषों का सुरक्षा प्रोटोकॉल- पवित्र अस्थि कलशों को राजकीय अतिथि का दर्जा दिया जाता है। यात्रा के दौरान इन्हें 24 घंटे सशस्त्र सुरक्षा घेरे में रखा जाता है। रूट पूरी तरह गोपनीय रहता है और एडवांस पायलट वाहन साथ चलता है। अवशेषों को स्मार्ट क्लाइमेट कंट्रोल, बुलेटप्रूफ और शॉक-प्रूफ केस में सुरक्षित रखा जाता है। एएसआई की टीम माइक्रोग्राम स्तर तक वैज्ञानिक जांच कर डिजिटल लॉग तैयार करती है। एसडीएम मनीष शर्मा के अनुसार मंगोलिया में करीब 10 दिनों तक श्रद्धालु इन पवित्र अवशेषों के दर्शन करेंगे। इसके बाद तय सुरक्षा मानकों और प्रोटोकॉल के तहत अस्थि कलशों को वापस सांची लाया जाएगा।

इजराइल ने हमास के आर्मी चीफ को हवाई हमले में मारा, 11 दिन पहले ही जिम्मेदारी मिली थी

तेहरान। इजराइल ने मंगलवार को गाजा में हमास की सैन्य शाखा

के कमांडर मोहम्मद ओदेह को एक हवाई हमले में मारने का दावा किया है। चश्मदीदों के मुताबिक कम से कम पांच मिसाइलें अलग-अलग दिशाओं से लगभग एक साथ दागी गईं। ओदेह को 11 दिन पहले ही सैन्य शाखा कमांडर पद की जिम्मेदारी मिली थी। हमास के पिछले सैन्य कमांडर इज्ज अद दीन अल हद्दाद की 15 मई को इसी तरह के एक हमले में मार डाला था। टाइम्स ऑफ इजराइल के मुताबिक इजराइली सेना ने गाजा सिटी में एक रिहायशी इमारत को निशाना बनाया। इसमें कम से कम 3 लोगों की मौत हुई और दर्जनों लोग घायल हो गए। इजराइली सेना और शिन बेट सुरक्षा एजेंसी ने कहा कि मोहम्मद ओदेह जिस इमारत में छिपा हुआ था, उसे कई महीनों की निगरानी के बाद निशाना बनाया गया। इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के कार्यालय ने कहा कि ओदेह 7 अक्टूबर नरसंहार की योजना बनाने वालों में से एक था। बयान में कहा गया कि वह कई इजराइली नागरिकों और सैनिकों की हत्या, अपहरण और हमलों के लिए जिम्मेदार था।

अफ्रीकी देशों से अहमदाबाद आए 11 लोग आइसोलेशन में, सरकार बोली- भारत में इबोला का कोई केस नहीं

बेंगलुरु। अफ्रीकी देशों में इबोला वायरस फैलने के चलते

युगांडा, दक्षिण सूडान और कांगो से अहमदाबाद आए 11 मरीजों को होम आइसोलेशन में रखा गया है। अहमदाबाद कॉर्पोरेशन के अधिकारी डॉ. भाविन सोलंकी ने बताया कि प्राथमिक जांच में इनमें से कोई भी संदिग्ध नहीं पाया गया है। लेकिन, एहितायन यह कदम उठाया है। वहीं, भारत सरकार ने बुधवार को बताया कि देश में इबोला वायरस से जुड़ा एक भी मामला नहीं है। सरकार को यह स्पष्टीकरण इसलिए देना पड़ा क्योंकि युगांडा से भारत आई एक महिला में इबोला जैसे लक्षण देखे गए थे। हालांकि बाद में महिला की रिपोर्ट नेगेटिव आई। महिला 23 मई को बेंगलुरु एयरपोर्ट पहुंची थी। जिसके बाद उसे एहतियातन सरकारी अस्पताल में आइसोलेशन में रखा गया। महिला के शरीर में हल्का दर्द था, हालांकि अब वह पूरी तरह स्वस्थ है। अफ्रीकी देश कांगो से फैला वायरस युगांडा तक पहुंच गया है। युगांडा में इबोला के 8 मामले सामने आ चुके हैं। पूरी दुनिया में इबोला वायरस डिसीज से पीड़ित मरीजों में 25फीसदी से 90फीसदी की मौत होती है। इबोला वायरस पहली बार 1976 में अफ्रीका में सामने आया था। उस समय सूडान और तत्कालीन जायरे (अब डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो) में इसके मामले मिले थे। कांगो में जिस इलाके में यह वायरस मिला, उसके पास बहने वाली इबोला नदी के नाम पर इसका नाम रखा गया। यह जानलेवा बीमारी संक्रमित व्यक्ति के खून, उल्टी और शरीर के दूसरे तरल पदार्थ के संपर्क से फैलती है। कांगो के पूर्वी इटुरी प्रांत में इबोला से अब तक 80 लोगों की मौत हो चुकी है। 246 संदिग्ध मामले सामने आए हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे ग्लोबल हेल्थ इमरजेंसी घोषित किया है। हालांकि, डब्लूएचओ का कहना है कि यह महामारी की कैटेगरी में नहीं आता है। कांगो के स्वास्थ्य मंत्री सैमुअल-रोजर कंबा के मुताबिक, पहला मामला एक नर्स का माना जा रहा है, जिसकी 24 अप्रैल को मौत हुई थी। बीमारी फिलहाल इतुरी प्रांत के बुनीया, रवामपारा और मोंगवालू इलाकों तक पहुंच चुकी है। एक्सपर्ट्स के मुताबिक, इस बार इबोला का बुंडीबुग्यो स्ट्रेन मिला है, जबकि कांगो में पहले ज्यादातर मामले जायरे स्ट्रेन के रहे हैं। इससे चिंता बढ़ी है, क्योंकि इबोला के मौजूदा कई इलाज और टीके जायरे स्ट्रेन को ध्यान में रखकर बनाए गए थे।

यूपी में ब्लास्ट की साजिश रच रहे 4 लड़के हुए अरेस्ट, बीजेपी दफ्तर, अस्पताल-स्कूल थे निशाने पर- पाकिस्तानी डॉन ने टारगेट दिया था

सहारनपुर। यूपी में बुधवार को एंटी टेररिस्ट स्क्वॉड और स्पेशल टास्क फोर्स ने पाकिस्तानी आतंकी मॉड्यूल के 4 संदिग्ध आतंकियों को गिरफ्तार किया है। ये भाजपा दफ्तरों, अस्पताल, स्कूल और अन्य कई संवेदनशील ठिकानों पर ब्लास्ट करने की साजिश रच रहे थे। संदिग्ध आतंकियों में 2 सहारनपुर के रहने वाले हैं। जबकि तीसरा हरिद्वार और चौथा मुजफ्फरनगर का रहने वाला है।

चारों को सहारनपुर से पकड़ा गया है। आरोपी पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी घ्घ्के कहने पर पाकिस्तानी गैंगस्टर शहजाद भट्टी और आबिद जट्?ट के संपर्क में थे। पूछताछ में आरोपी महकाब और गगनदीप उर्फ गुरी ने बताया- 'इंस्टाग्राम पर उनकी शहजाद भट्?टी और आबिद जट्ट से बातचीत होती थी। आबिद जट्ट ने उन्हें देश की एक राजनैतिक पार्टी के कार्यालय, अस्पताल और एक व्यक्ति, जिसके कई स्कूल हैं, उनको निशाना बनाकर उड़ाने के लिए, रेकी करने के लिए कहा था। आबिद ने यह भी कहा था कि यह काम हो जाने के बाद इन्हें अगला टारगेट दिया जाएगा।' जांच एजेंसियों का दावा है कि चारों आरोपियों के खिलाफ अहम सबूत मिले हैं। इनके खिलाफ लखनऊ स्थित एटीएस थाने में केस दर्ज किया गया है। एडीजी लॉ एंड ऑर्डर अमिताभ यश ने बताया, महकाब निवासी सहारनपुर, गगनदीप उर्फ गुरी सिंह निवासी मुजफ्फरनगर, शाहरुख निवासी सहारनपुर और मुशर्रफ निवासी हरिद्वार को सहारनपुर से गिरफ्तार किया गया है। पाकिस्तानी गैंगस्टर आबिद जट्ट ने वीडियो कॉल पर चारों को देश में कई जगहों पर आतंकी घटनाओं को अंजाम देने के लिए अधिक से अधिक लोगों को अपने साथ जोड़ने के लिए भी कहा था। महकाब और गगनदीप ने ही शाहरुख और मुशर्रफ को अपने साथ जोड़ा था। इन चारों के बीच सोशल मीडिया पर अस्पताल उड़ाने के लिए रेकी और हथियार खरीदने की बात की जा रही थी। मार्च, 2026 में किसी बड़ी घटना को अंजाम देने के लिए महकाब और गगनदीप ने नोएडा में मीटिंग की थी। मीटिंग में इनके बीच पैसे और हथियार आदि लेने की बात हुई थी। तेलंगाना पुलिस ने 25 मई को गाजियाबाद के जैद खान को अरेस्ट किया था। जांच में सामने आया कि जैद ने यूपी के कई मंत्रियों के मोबाइल नंबर पाकिस्तानी हैंडलर्स तक पहुंचाए थे। जैद सोशल मीडिया पर रील बनाता था। इसी दौरान वह आईएसआई एजेंटों के संपर्क में आया। पूछताछ में जैद ने कई लोगों के नंबर और लोकेशन शेयर करने की बात कबूल की है। फिलहाल पुलिस उसके मोबाइल, सोशल मीडिया चैट और संपर्कों की जांच कर रही है। दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल की जांच के अनुसार, भारतीय खुफिया और कानून प्रवर्तन एजेंसियों ने पाकिस्तान में बैठे गैंगस्टर से आतंकी बने शहजाद भट्टी और आबिद जट्ट को, हाल ही में सामने आए संगठन तहरीक-ए-तालिबान हिंदुस्तान का कथित मास्टरमाइंड बताया है।

फ्रांस में सैकड़ो स्कूलों में चाइल्ड एब्यूज स्कैंडल,3 साल की बच्ची का 'मॉनिटर' ने रेप किया, केस की खुली सुनवाई शुरू

पेरिस। फ्रांस इस समय एक

बड़े चाइल्ड एब्यूज स्कैंडल से जूझ रहा है। पेरिस समेत 100 से ज्यादा स्कूलों और डे-केयर सेंटरों में बच्चों के साथ हिंसा, यौन शोषण और रेप के आरोपों की जांच चल रही है। मामले सामने आने के बाद देशभर में आक्रोश बढ़ गया है। 100 से ज्यादा संस्थानों में जांच- पेरिस की प्रॉसिक्यूटर लॉर बेको ने बताया कि राजधानी में 84 प्रीस्कूल, करीब 20 प्राइमरी स्कूल और लगभग 10 डे-केयर सेंटरों में जांच चल रही है। कई मामलों में छोटे बच्चों के साथ रेप और यौन शोषण के आरोप लगाए गए हैं। आरोप स्कूल मॉनिटर्स पर लगे हैं। ये वे कर्मचारी होते हैं जो बच्चों की देखभाल लंच ब्रेक, खेल, सोने के समय और आफ्टर-स्कूल गतिविधियों के दौरान करते हैं। कोर्ट के बाहर क्षशऊददएम्ददत आंदोलन से जुड़े लोगों ने प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने बैनर पर लिखा- 'कोई भी बच्चा स्कूल जाने से न डरे।' आंदोलन की सह-संस्थापक बार्का जरूआली ने कहा कि अब पूरे देश में बच्चों की सुरक्षा को लेकर जागने की जरूरत है। बच्चों को भूखा रखने और मारपीट के आरोप- अभिभावकों ने आरोप लगाया कि कुछ मॉनिटर्स बच्चों पर चिल्लाते थे, बाल खींचते थे और खाना देने से मना कर देते थे। कुछ मामलों में बच्चों के साथ यौन शोषण के आरोप भी लगे हैं। पीड़ित परिवारों के वकीलों का कहना है कि कई अभिभावकों को शिकायत दर्ज कराने और कार्रवाई करवाने के लिए महीनों संघर्ष करना पड़ा। पीड़ित परिवारों ने ट्रायल सार्वजनिक कराया-फ्रांस में बच्चों से जुड़े मामलों की सुनवाई आमतौर पर बंद कमरे में होती है, लेकिन इस बार पीड़ित परिवारों ने ट्रायल सार्वजनिक रखने की मांग की।

आगे की खबर पेज संख्या 07 पर...

भारत को पछाड़कर ताइवान 5वां सबसे बड़ा शेयर मार्केट बना

नयी दिल्ली। 25 मई को ब्लूमबर्ग की जारी रिपोर्ट के मुताबिक, भारत को पीछे छोड़ ताइवान दुनिया

का 5वां सबसे बड़ा शेयर मार्केट बन गया है। ताइवान का कुल मार्केट कैप 4.95 ट्रिलियन हुआ, जबकि भारत का मार्केट कैप 4.92 ट्रिलियन है। ताइवान के शेयर मार्केट में आए इस उछाल का मुख्य कारण ताइवानी सेमीकंडक्टर और एआई इंडस्ट्री की बढ़ती मांग है। ताइवान के मार्केट में आई इस तेजी की सबसे बड़ी वजह चिप निर्माता कंपनी Taiwan Semiconductor Manufacturing Company यानी टीएसएमसी रही है। कंपनी के शेयर इस साल करीब 49 प्रतिशत बढ़े हैं। भारत अब ग्लोबल शेयर मार्केट रैंकिंग में छठे नंबर पर आ गया है। दुनिया के सबसे बड़े शेयर मार्केट अमेरिका, चीन, जापान और हांगकांग के हैं। शेयर मार्केट रैंकिंग के मामले में ताइवान भारत से आगे है, लेकिन अर्थव्यवस्था के आकार में भारत अब भी काफी बड़ा है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के अनुमान के मुताबिक, भारत की अर्थव्यवस्था करीब 4.15 ट्रिलियन डॉलर की है और यह दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। वहीं, ताइवान का ग्रॉस डोमेस्टिक प्रोडक्ट यानी, जीडीपी करीब 977 अरब डॉलर है।

जेठ के बड़े मंगलवार पर नैनी में उमड़ा आस्था का सैलाब,भव्य सुंदरकांड पाठ के साथ विशाल शीतल शरबत शिविर संपन्न

जिला अपराध निरोधक कमेटी, श्री राम टूर एंड ट्रैवल्स एवं श्री राम समाज सेवा दल की अनूठी पहल; हजारों श्रद्धालुओं ने ग्रहण किया प्रसाद

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नैनी/प्रयागराज। जेठ मास के पावन एवं बड़े मंगलवार के शुभ अवसर पर नैनी (प्रयागराज) में भक्ति और जनसेवा का एक अनूठा संगम देखने को मिला। जिला अपराध निरोधक कमेटी (यमुनानगर यूथ टीम), श्री राम

टूर एंड ट्रैवल्स, एवं श्री राम समाज सेवा दल के संयुक्त तत्वावधान में एक भव्य 'सुंदरकांड पाठ एवं विशाल शीतल शरबत सेवा शिविर' का अत्यंत गरिमामयी आयोजन किया गया। भीषण गर्मी के बावजूद, दोपहर 2:00 बजे से लेकर रात्रि 8:00 बजे तक चले इस आयोजन में आस्था का जनसैलाब उमड़ पड़ा। नगर और स्थानीय मोहल्लों के हजारों श्रद्धालुओं ने संकटमोचन हनुमान जी के दर्शन किए और शीतल शरबत, फल व बाबा का दिव्य प्रसाद ग्रहण किया। भक्तिमय सुंदरकांड एवं सांस्कृतिक रसवर्षा- कार्यक्रम का शुभारंभ सुंदरकांड मंडली के विद्वानों द्वारा सस्वर पाठ से हुआ, जिससे संपूर्ण क्षेत्र का वातावरण अत्यंत पवित्र और भक्तिमय हो उठा। सुंदरकांड के उपरांत मंडली के कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए एक से बढ़कर एक दिव्य भजनों ने उपस्थित जनसमुदाय को भावविभोर कर दिया। संगीत की सुमधुर लहरियों पर श्रद्धालु झूमने को मजबूर हो गए। कुशल नेतृत्व एवं प्रेरणास्रोत- इस विशाल और सुव्यवस्थित आयोजन की संपूर्ण रूपरेखा प्रख्यात जनसेवक श्री मनीष विश्वकर्मा जी (संचालकः श्री राम टूर एंड ट्रेवल्स, अध्यक्षः श्री राम समाज सेवा दल, एवं प्रभारीः जिला अपराध निरोधक कमेटी, यमुनानगर यूथ टीम, नैनी) के कुशल मार्गदर्शन और नेतृत्व में तैयार की गई थी। सामाजिक और धार्मिक कार्यों में सदैव अग्रणी रहने वाले श्री विश्वकर्मा ने स्वयं उपस्थित रहकर पूरी व्यवस्था की कमान संभाली। प्रशासनिक सहयोग एवं सुदृढ़ सुरक्षा व्यवस्था- आयोजन को गरिमामयी, सुरक्षित और अनुशासित ढंग से संपन्न कराने में स्थानीय पुलिस प्रशासन का योगदान बेहद सराहनीय रहा। चिलचिलाती धूप में भी कानून व सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखने के लिए निम्नलिखित अधिकारियों ने अपनी टीम के साथ मुस्तैद रहकर पूर्ण सहयोग प्रदान किया। बृज किशोर गौतम जी (प्रभारी निरीक्षक, थाना नैनी) अमित कुमार (चौकी प्रभारी, पी.डी.ए.) रामानंद (चौकी प्रभारी, काशीराम चौकी) समितियों का समन्वय एवं प्रमुख सेवादार-इस पुनीत सेवा कार्य में जिला अपराध निरोधक समिति और भोले भक्त समिति के पदाधिकारियों ने कंधे से कंधा मिलाकर काम किया। जय भोले भक्त समिति के स्वामी प्रमोदानंद पुरी, महामंडलेश्वर राजेश गिरी महाराज संत स्वामी महेश्वरानंद पुरी महाराज सेवा कार्य को दिव्य ऊर्जा दी। यमुनानगर यूथ टीम के ऊर्जावान सदस्यों ने 'तन, मन और धन' से समर्पित होकर इस आयोजन को सफल बनाया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से सहयोगी रहे गणमान्य महानुभावः-मुख्य सहयोगीः शिव प्रताप सिंह, सक्षम शर्मा, रमेश लाल श्रीवास्तव, जयप्रकाश पांडेय, राजू श्रीवास्तव,करछना थाना से संजय कुमार मिश्रा विनय द्विवेदी जी। आर.एस.एस. प्रतिनिधिः श्री आशुतोष पांडेय जी एवं अन्य सम्मानित समाजसेवी। विशेष सेवादारः विमल सक्सेना, दिग्विजय सिंह, राजू श्रीवास्तव,गौरव विश्वकर्मा, मनीष यादव, संदीप चंद्र श्रीवास्तव, कृष्ण विश्वकर्मा, राकेश शर्मा, रोहित सिंह, आकाश सिंह, मोहम्मद अरशद के साथ टीम के आदि सदस्य गण मौजूद रहे। संकल्प संदेशः- 'सनातन संस्कृति का संरक्षण और पीड़ित मानवता की सेवा ही हमारा परम ध्येय है। जिला अपराध निरोधक कमेटी, श्रीराम टूर एंड ट्रेवल्स, एवं श्री राम समाज सेवा दल यह संकल्प दोहराता है कि लोक-कल्याण और जनसेवा के ऐसे भव्य और रचनात्मक कार्यक्रम भविष्य में भी निरंतर और व्यापक स्तर पर आयोजित किए जाते रहेंगे।'

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक संपन्न

प्रयागराज। जिला स्वास्थ्य समिति (शासी निकाय) की बैठक

बुधवार को जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा की अध्यक्षता एवं मुख्य विकास अधिकारी हर्षिका सिंह की उपस्थिति में संपन्न हुई. बैठक में जिलाधिकारी ने सभी प्रभारी चिकित्सा अधिकारियों को सीएचसी में सभी आवश्यक व्यवस्थाएँ एवं सुविधाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं । उन्होंने आयुष्मान कार्ड बनाने के प्रगति की समीक्षा करते हुए निर्देश दिए कि आयुष्मान कार्ड बनाने की प्रतिदिन संख्या में जनपद प्रयागराज पूरे प्रदेश में प्रथम स्थान पर रहे और ज़्यादा से ज़्यादा लाभार्थियों का आयुष्मान कार्ड बनाया जाए । इसमे किसी प्रकार की लापरवाही स्वीकार्य नहीं है ।जिलाधिकारी ने आयुष्मान गोल्डन कार्ड की प्रगति की समीक्षा करते हुए जनपद की खराब रैंकिंग पर सख्त नाराजगी व्यक्त करते हुए समस्त चिकित्सा अधीक्षकों को चेतावनी दिया कि प्रतिदिन औसतन प्रतिदिन 200 गोल्डेन कार्ड नहीं बनने पर संबंधित चिकित्सा अधीक्षकों के खिलाफ कठोर कार्यवाही किया जाएगा. जिलाधिकारी ने सीडीओ को आयुष्मान कार्ड बनाने के प्रगति की प्रतिदिन समीक्षा करने का भी निर्देश दिया। बैठक में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत संचालित कार्यक्रमों की समीक्षा करते हुए हुए मुख्य विकास अधिकारी हर्षिका सिंह ने जननी सुरक्षा कार्यक्रम में निम्नतम उपलब्धि वाले ब्लॉकों क्रमशः रामनगर. सोराव, बहादुरपुर, चाका, कौधियारा, सैदाबाद एवं मांडा के चिकित्सा अधीक्षकों को निर्देशित किया कि

रामनगर, सोराव, बहादुरपुर, चाका, कौधियारा, सैदाबाद एवं मांडा के चिकित्सा अधीक्षकों को शत प्रतिशत गर्भवती महिलाओं का प्रसव सरकारी अस्पतालों में सुनिश्चित कराने के दिए निर्देश,आयुष्मान गोल्डन कार्ड बनाए जाने की खराब प्रगति पर जिलाधिकारी ने जताई कड़ी नाराजगी, प्रतिदिन लगभग 200 गोल्डन कार्ड बनाए जाने के लिए निर्देश

शत-प्रतिशत गर्भवती महिलाओ की सूची आशाओं में माध्यम से बनवाते हुए उनका प्रसव सरकारी चिकित्सालयों में करवाना सुनिश्चित करें. लापरवाही करने पर सम्बंधित चिकित्सा अधीक्षक के खिलाफ सख्त कार्यवाही किया जायेगा। फर्स्ट रेफरल यूनिट (एफआरयू) सीएचसी में हुए सिजेरियन प्रसव की समीक्षा करते हुए सीडीओ ने सीएचसी कोरांव एवं हंडिया में माह अप्रैल 2026 में क्रमशः 6-6 सिजेरियन प्रसव होने पर नाराजगी व्यक्त करते हुए मुख्य चिकित्सा अधिकारी को निर्देशित किया कि सिजेरियन प्रसव करने में रूचि नहीं लेने वाली सम्बंधित स्त्री रोग विशेषज्ञ के खिलाफ कार्यवाही करना सुनिश्चित करें. उन्होंने कहा कि ज्यादा से ज्यादा गर्भवती महिलाओं का संस्थागत प्रसव ही कराया जाए। जननी सुरक्षा योजना के लाभार्थियों का भुगतान की प्रगति अत्यन्त असंतोषजनक पाए जाने पर सीडीओ ने समस्त ब्लॉक लेखा प्रबंधकों का बेतन संतोषजनक प्रगति होने तक रोकने का निर्देश दिया। सीडीओ ने चिकित्सा अधीक्षकों को निर्देशित किया कि वे समस्त मातृ मृत्यु एवं बाल मृत्यु की अनिवार्य रूप से रिपोर्टिंग सम्बंधित पोर्टल पर कराना सुनिश्चित करें ताकि मृत्यु के कारणों की समीक्षा करते हुए आवश्यक सुधारात्मक कार्यवाही किया जा सके। आयुष्मान आरोग्य मंदिरों की क्रियाशीलता की समीक्षा करते हुए जिलाधिकारी ने सीएचओ द्वारा किए जा रहे ई -संजीविनी तथा ओपीडी की रैंडम जांच करने का निर्देश दिया. लंबे समय से अनुपस्थित सीएचओ की संविदा सेवा समाप्त करने का निर्देश सीएमओ को दिया। आरबीएसके कार्यक्रम की समीक्षा करते हुए जिलाधिकारी ने मेडिकल मोबाइल टीमों को गाड़ी समय उपलब्ध नहीं कराने की शिकायत पर वेंडर को काली सूची में डालते हुए नया टेंडर करने का निर्देश दिया.इस अवसर पर मुख्य चिकित्सा अधिकारी श्री डॉ अरुण कुमार तिवारी सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

द स्टेप फाउंडेशन द्वारा आयोजित समर कैंप

आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। द स्टेप फाउंडेशन द्वारा आयोजित समर कैंप 2026 का दूसरा दिन बच्चों के लिए उत्साह, ऊर्जा और नई सीख से भरपूर रहा। बुधवार को कैंप में विशेष रूप से मार्शल आर्ट एवं आर्ट-क्राफ्ट गतिविधियों का आयोजन किया गया, जहाँ बच्चों ने पूरे जोश और खुशी के साथ सहभागिता की। मार्शल आर्ट प्रशिक्षकों मिथुन निषाद एवं अभय निषाद द्वारा बच्चों को आत्मरक्षा, अनुशासन और आत्मविश्वास से जुड़ी महत्वपूर्ण बातें सिखाई गईं। वहीं आर्ट-क्राफ्ट गतिविधियों में बच्चों ने अपनी रचनात्मक प्रतिभा का सुंदर प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में द स्टेप फाउंडेशन की संस्थापक आयुषी पांडेय उपस्थित रहीं। साथ ही सदस्य सचिन पांडेय, चन्द्रांशु सिंह एवं अन्य सहयोगियों ने अपनी सहभागिता देकर बच्चों का उत्साहवर्धन किया। इस अवसर पर ऋषभ (RDX Event Management) भी विशेष रूप से मौजूद रहे। साथ ही आर्ट-क्राफ्ट एवं मार्शल आर्ट के प्रशिक्षकों ने बच्चों को नई-नई गतिविधियों के माध्यम से सीखने और आगे बढ़ने का अवसर प्रदान किया। समर कैंप का उद्देश्य बच्चों के भीतर आत्मविश्वास, रचनात्मकता और सकारात्मक सोच का विकास करना है, ताकि वे शिक्षा के साथ-साथ जीवन के आवश्यक गुणों को भी सीख सकें। बच्चों की मुस्कान और उत्साह ने पूरे वातावरण को आनंदमय बना दिया।

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज के मोती लाल नेहरू मेडिकल कॉलेज के नवनियुक्त प्रधानाचार्य आदरणीय डॉ ए के वर्मा जी ने आज से कार्यभार संभाला।

अधुनिक समाचार विशेष

अरैल से डीपीएस तक 'नशे की गलियां'! स्कूल यूनिफॉर्म में नाबालिगों के बीच सिगरेट, शराब और संदिग्ध गतिविधियों का खुला खेल

चाय की दुकानों की आड़ में चल रहा कथित गोरखधंधा, स्थानीय लोगों ने उठाए प्रशासन पर सवाल

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। अरैल से डीपीएस मार्ग तक स्थित कई चाय और खानपान की दुकानों को लेकर गंभीर आरोप सामने आ रहे हैं। स्थानीय नागरिकों का कहना है कि इन दुकानों पर नाबालिग लड़के-लड़कियां स्कूल यूनिफॉर्म में खुलेआम सिगरेट, शराब और अन्य नशे का सेवन करते दिखाई देते हैं। क्षेत्रवासियों के अनुसार यह अब 'आम दृश्य' बन चुका है, जिससे अभिभावकों में गहरी चिंता व्याप्त है। स्थानीय लोगों का आरोप है कि कुछ दुकानों के पीछे और ऊपरी कमरों में संदिग्ध गतिविधियां संचालित होती हैं। आरोप यह भी है कि चाय की दुकानों की आड़ में नशे और कथित अवैध कारोबार को बढ़ावा दिया जा रहा है। हालांकि इन आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि अभी नहीं हो सकी है। नाबालिगों का भविष्य खतरे में! - रोजाना स्कूल ड्रेस में बच्चों की भीड़ इन अड्डों पर देखे जाने की बात कही जा रही है। क्षेत्रीय लोगों का कहना है कि कई बच्चे पढ़ाई के बजाय नशे की गिरफ्त में जा रहे हैं। अभिभावकों का आरोप है कि प्रशासन की अनदेखी ने इस समस्या को और गंभीर बना दिया है। प्रशासन पर उठे सवालः- स्थानीय नागरिक पूछ रहे हैं कि क्या नगर निगम, पुलिस विभाग, नारकोटिक्स विभाग और पर्यटन विभाग को इन गतिविधियों की जानकारी नहीं है? यदि जानकारी है तो अब तक कार्रवाई क्यों नहीं हुई? स्थानीय लोगों की मांग- संदिग्ध दुकानों की तत्काल जांच, नाबालिगों को नशा बेचने वालों पर सख्त कार्रवाई, स्कूल क्षेत्रों के आसपास विशेष पुलिस निगरानी, अवैध कमरों और गतिविधियों की जांच, अभिभावकों और स्कूल प्रशासन के साथ संयुक्त अभियान। समाज के लिए गंभीर चेतावनीः-विशेषज्ञों का मानना है कि यदि समय रहते ऐसे मामलों पर रोक नहीं लगी तो युवा पीढ़ी तेजी से नशे और अपराध की ओर बढ़ सकती है। स्कूलों के आसपास बढ़ती ऐसी गतिविधियां पूरे समाज के लिए खतरे की घंटी मानी जा रही हैं। (नोटः समाचार में लगाए गए आरोप स्थानीय लोगों और क्षेत्रीय चर्चाओं पर आधारित हैं। संबंधित विभागों की आधिकारिक प्रतिक्रिया प्राप्त होने पर समाचार अपडेट (फ़ॉलोअप) किया जाएगा।)

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। ईद-उल-अज़हा (बकरीद) पर्व की नमाज के दृष्टिगत पुलिस उपायुक्त नगर

द्वारा पुलिस उपायुक्त कमिश्नरेट प्रयागराज के साथ आज दिनांक 28.05.2026 को नगर क्षेत्र में भ्रमणशील रहकर

प्रमुख ईदगाह/मस्जिदों का भ्रमण कर कानून व्यवस्था का जायजा लिया गया तथा सर्वसंबंधित को आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए।

यूपी में बदलेगा मौसम, 69 जिलों में बारिश का अलर्ट,नौतपा का असर होगा कम, गर्मी में कैट-बर्ड आये करीब

प्रयागराज/लखनऊ। प्रयागराज में बुधवार देर रात से मौसम का मिजाज अचानक बदल गया। रातभर तेज हवाएं चलती गर्मियों में वो विशेष रूप से जीवों को समय देते हैं उसमे उनका सहकर्मी जो की पर्शियन कैट 'क्यूटो' हैं वो भी सहयोग करता से प्रदेशभर में तेज हवा चल रही है और बादल छाए हैं। आज 69 जिलों में बारिश का अलर्ट है। इनमें से 24 जिलों में ओले भी

रहीं, जिसका असर गुरुवार सुबह भी देखने को मिला। सुबह से तेज धूप निकलने के बावजूद हवाओं के चलते धूप का असर पहले के मुकाबले थोड़ा कमजोर नजर आया और लोगों को भीषण गर्मी से कुछ राहत मिली। प्रयागराज में एक व्यक्ति 'बागी विकास' गर्मी को ध्यान में रखते हुए अपना पूरा घर ही पक्षियों के हवाले कर उनकी सेवा में तत्पर हैं हालांकि ऐसा वो कई वर्षो से करते आ रहें हैं पर हैं सभी पक्षियों से उसके मधुर सम्बन्ध हैं। इसके अलावा वो पक्षी प्रेमियों को निःशुल्क हैंड-मेड घोसले भी वितरित करते हैं जो की समय निकाल के वो खुद बनाते हैं। मौसम विभाग के अनुसार दोपहर के समय हीट वेव का असर फिर बढ़ सकता है। विभाग ने लोगों को दोपहर में तेज धूप से बचने और जरूरी होने पर ही बाहर निकलने की सलाह दी है। नौतपा गुरुवार को चौथा दिन है। सुबह गिर सकते हैं। 100 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से हवा चल सकती है। मौसम विभाग का कहना है कि 31 मई तक आंधी-तूफान के साथ भारी बारिश का सिलसिला जारी रह सकता है। इधर, प्रदेशभर में भीषण गर्मी भी पड़ रही है। मौसम विभाग ने 11 जिलों में हीटवेव चलने की संभावना जताई है। गुरुवार की बात करें तो बांदा 47.8डिग्री के साथ प्रदेश का सबसे गर्म शहर रहा।

सीएम के मंच पर उदयभान, पूजा पाल गैरहाजिर,सजा माफी के बाद पहली बार साथ दिखे उदयभान

प्रयागराज। सीएम योगी आएं और राजनैतिक गलियारों में हलचल न हो ऐसा कम ही होता है। अबकी बार सीएम के कार्यक्रम को लेकर दो ऐसे घटनाक्रम हुए जो खास चर्चा में हैं। सबसे अहम तो भाजपा के पूर्व विधायक उदयभान करविरया को लेकर चर्चाओं का बाजार गरम है। चूंकि उदयभान सजायाफ्ता हैं और सरकार की तरफ से उनकी सजामाफी हुई है। ऐसे में सालों बाद उदयभान का सीएम के साथ मंच साझा करना खास तवज्जों का विषय बना है। जबकि सीएम के साथ मंच साझा करने वालों में एक भी पूर्व विधायक नहीं थे। बस मंत्री, सांसद, विधायक और मेयर ही रहे। उदयभान का सीएम के मंच पर पहुंचने को लेकर चर्चा इसलिए भी है क्योंकि इन दिनों पूर्व विधायक उदयभान यूपी के डिप्टी सीएम को लेकर कई बयान दे चुके जो विवादों में है। हालांकि, मंच से सीएम योगी ने अपने भाषण में उदयभान का नाम तक नहीं लिया जबकि अन्य नेताओं ने बाकियों के साथ उदयभान का नाम प्रमुखता से लिया था।

दूसरी खास चर्चा सपा की बागी विधायक पूजा पाल की है। सपा प्रमुख अखिलेश यादव के खिलाफ खूब बयानबाजी करने वाली पूजा पाल पिछले कुछ दिनों से कई कार्यक्रमों में सीएम से मिलीं।

वह मंच पर भी नजर आती रहीं, लेकिन मंत्री पद के विस्तार के बाद उनकी चुप्पी चर्चा में है।

चंडीगढ़ में गाय को राष्ट्रीय-पशु घोषित करने की मांग, ईद-उल-अजहा पर लोगों ने आवाज उठाई, कहा- भाईचारा मजबूत होगा

चंडीगढ़। सेक्टर-29 स्थित मस्जिद के बाहर ईद-उल-अजहा के मौके पर मुस्लिम समाज के लोगों ने गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करने की मांग उठाई। ईद की नमाज के बाद वीरवार को समाज के प्रतिनिधियों और स्थानीय लोगों ने एकजुट होकर केंद्र सरकार से इस संबंध में ठोस कदम उठाने की अपील की। समाज के लोगों ने कहा कि गाय को राष्ट्रीय पशु का दर्जा दिए जाने से देश में सांप्रदायिक सौहार्द और भाईचारा मजबूत होगा। उनका कहना था कि गाय भारतीय संस्कृति और आस्था का महत्वपूर्ण प्रतीक है, इसलिए इसके संरक्षण के लिए प्रभावी नीति बनाई जानी चाहिए। प्रतिनिधियों ने केंद्र सरकार से मांग की कि गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करने के साथ ही उसके संरक्षण और देखभाल के लिए सख्त कानून और ठोस नीति लागू की जाए। इस दौरान लोगों ने आपसी भाईचारे और शांति बनाए रखने का संदेश भी दिया। ईद की पूर्व संध्या पर, सांसद सतनाम सिंह के नेतृत्व में 'इंडियन माइनॉरिटीज फेडरेशन' ने चंडीगढ़ की जामा मस्जिद में आखिरी रोजा इफ्तार में शिरकत की। उन्होंने ईद की दिली मुबारकबाद दी और मौलाना साहब के साथ मिलकर, इस्लाम में प्रेम, एकता व भाईचारे के संदेश पर बात की।

प्री-मानसून बारिश 29 मई से 5 जून तक संभव, 90फीसदी भारत कवर करेगी, केरल में नमी कम होने से अटका मानसून

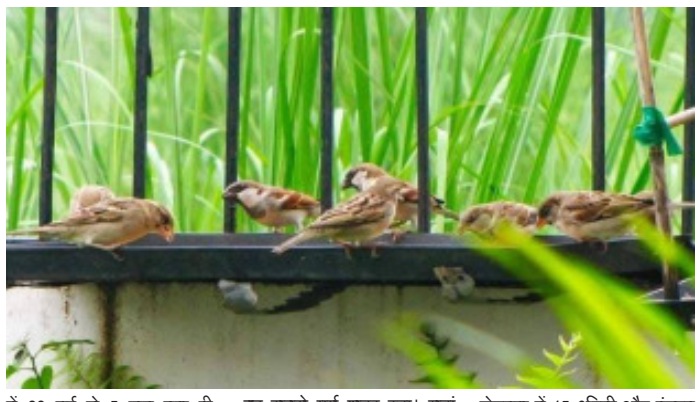

लखनऊ। तेज गर्मी से जूझ रहे देश के 80-90फीसदी हिस्से में 29 मई से 5 जून तक प्री-मानसून बारिश हो सकती है। यह बारिश इसलिए अहम है, क्योंकि मानसून अभी केरल नहीं पहुंचा है। यहां 14 तय स्टेशनों में लगातार दो दिन 2.5 एमएम बारिश होने पर मानसून पहुंचने का ऐलान किया जाता है। मौसम विभाग ने 26 मई को मानसून पहुंचने का अनुमान लगाया था, लेकिन यहां नमी कमजोर होने से मानसून आगे नहीं बढ़ पाया है। वहीं, दक्षिण-मध्य अरब सागर में चक्रवाती सर्कुलेशन से भी बादल कमजोर हुए हैं। यूरोप की मौसम एजेंसी यूरोपियन सेंटर फॉर मीडियम-रेंज वेदर फोरकास्ट्स ने सैटेलाइट, समुद्री और वायुमंडलीय डेटा को मिलाकर भारत में 15 दिनों की बारिश का पूर्वानुमान निकाला है। इसमें अगले 8 दिनों में दक्षिण भारत, पूर्वी भारत, पूर्वोत्तर और बंगाल की खाड़ी के इलाकों में ज्यादा बारिश का संकेत हैं। उत्तर प्रदेश का बांदा एक बार फिर मंगलवार को देश का सबसे गर्म शहर रहा। यहां पारा 47.4डिग्री पहुंच गया। लगातार नवें दिन यहां तापमान 47डिग्री के पार पहुंचा। बांदा के अलावा उत्तर प्रदेश के पांच और जिलों में तापमान 45डिग्री से ज्यादा रहा, इनमें उरई 45.8डिग्री, झांसी 45.5डिग्री, प्रयागराज 45.4डिग्री, आगरा 45.3डिग्री और हमीरपुर 45.2डिग्री शामिल हैं। राजस्थान का श्रीगंगानगर 47डिग्री तापमान के साथ देश का दूसरा सबसे गर्म शहर रहा। बीकानेर और फलोदी में अधिकतम तापमान 46डिग्री रहा। जैसलमेर में 45.6डिग्री और कोटा में 45.4डिग्री रहा। जयपुर में भी 43.2डिग्री था। महाराष्ट्र के कई जिलों में भी तापमान 45डिग्री से ऊपर पहुंच गया। ब्रह्मपुरी में पारा 46.6डिग्री पहुंचा, जो सामान्य से 3.5डिग्री था। इसके अलावा चंद्रपुर में 46.4डिग्री, वर्धा में 46डिग्री, नागपुर के सोनेगांव में 45.5डिग्री और गोंदिया में 45.2डिग्री रहा। हरियाणा में सिरसा 46डिग्री, रोहतक में 45.6डिग्री और पंजाब के बठिंडा में 45.8 तक पहुंचा। दिल्ली में भी अधिकतम तापमान 43.5डिग्री रहा, जो सामान्य से 3.1डिग्री ज्यादा था। 29 मई का मौसम - राजस्थान के कुछ हिस्सों में हीटवेव का असर जारी रह सकता है। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, यूपी और मध्य भारत के कई इलाकों में गर्मी से कुछ राहत मिलने के आसार हैं। गुजरात और तमिलनाडु के कुछ हिस्सों में गर्म और उमस भरा मौसम रह सकता है। हरियाणा, पंजाब, चंडीगढ़-दिल्ली, हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर में आंधी और कुछ जगह ओले गिरने का अलर्ट है। कई इलाकों में तापमान 3डिग्री से 7डिग्री तक गिर सकता है। बिहार, पश्चिम बंगाल, यूपी, पंजाब, हरियाणा समेत कई राज्यों में 50-70 किमी/घंटा की रफ्तार से तेज हवाएं चलने और कुछ जगह हल्की बारिश की संभावना है।

रानी दुर्गावती छात्रावास की छात्राओं ने भोजन व्यवस्था पर उठाए सवाल

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) मैहर। रानी दुर्गावती छात्रावास, मैहर में रहने वाली छात्राओं ने छात्रावास में भोजन व्यवस्था नहीं होने का आरोप लगाया है। इस संबंध में एक वीडियो भी सोशल मीडिया पर सामने आया है, जिसे भीम आर्मी मैहर के इंस्टाग्राम हैंडल पर अपलोड किया गया है। वीडियो में छात्राओं का कहना है कि पिछले लगभग दो महीनों से छात्रावास में भोजन की उचित व्यवस्था नहीं की जा रही है। इसके कारण उन्हें अपने घरों से अनाज, सब्ज़ी एवं अन्य खाद्य सामग्री लाकर स्वयं भोजन बनाना पड़ रहा है। छात्राओं के अनुसार वर्तमान में उनकी परीक्षाएँ चल रही हैं, जिससे पढ़ाई के साथ भोजन की व्यवस्था करना उनके लिए कठिन हो रहा है। उन्होंने बताया कि छात्रावास में रहने वाली अधिकांश छात्राएँ आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों से आती हैं और रोजाना घर से राशन लाना उनके लिए संभव नहीं है। छात्राओं का आरोप है कि कई बार संबंधित अधिकारियों और छात्रावास प्रबंधन को समस्या से अवगत कराया गया, लेकिन अब तक कोई ठोस समाधान नहीं निकाला गया है। छात्राओं ने जिला प्रशासन एवं संबंधित अधिकारियों से मांग की है कि मामले की जांच कर छात्रावास में भोजन एवं अन्य आवश्यक सुविधाओं की तत्काल व्यवस्था सुनिश्चित की जाए, ताकि वे अपनी पढ़ाई और परीक्षाओं पर ध्यान केंद्रित कर सकें। - समस्त छात्राएँरानी दुर्गावती छात्रावास, मैहर।

5 फीट हाइट-220 किलो का बकरा,इंदौर का सुल्तान रोज 250 ग्राम ड्राइफ्रूट के साथ 2 लीटर दूध पीता है, रु8 लाख लग चुकी कीमत

इंदौर। देशभर के साथ मध्य प्रदेश में भी 28 मई को ईद-उल-अजहा मनाई जाएगी। इस मौके पर इंदौर में 220 किलो के बकरे 'सुल्तान' की कुर्बानी दी जाएगी।गुलजार कॉलोनी निवासी मोईन खान करीब एक साल पहले सुल्तान को पंजाब से एक हजार किलोमीटर का सफर दो दिन में तय कर इंदौर लाए थे। सुल्तान को रोज 2 लीटर दूध, 250 ग्राम ड्राइफ्रूट और करीब 10 किलो पत्ते की डाइट दी जा रही है। मोईन खान ने बताया कि उन्हें शुरू से ही कुर्बानी के लिए भारी बकरे लाने का शौक रहा है। सुल्तान को उन्होंने एक लाख 20 हजार रुपए में खरीदा था। ईद के मद्देनजर इसे खरीदने कई ग्राहक आए। एक ने तो सुल्तान की कीमत 8 लाख रुपए तक लगा दी लेकिन मोईन खान ने इसे बेचने से मना कर दिया। मोईन ने बताया कि सुल्तान पंजाब की बीटल नस्ल का है। यह भूरे रंग का स्पॉटेड बकरा है। इसकी जमीन से लेकर गर्दन तक की हाइट करीब 5 फीट है। सुल्तान रोज सुबह 2 लीटर दूध पीता है। गर्मी से बचाने के लिए कूलर लगाया गया है। उसे हमेशा ठंडा पानी ही पिलाया जाता है। राऊ से बकरा देखने इंदौर की गुलजार कॉलोनी आए फैजान कुरैशी ने कहा- सुल्तान की काफी तारीफ सुनी थी। उसे तंदुरुस्त रखने के लिए मोईन खान काफी मेहनत कर रहे हैं। वे अपने बच्चे की तरह सुल्तान का ख्याल रख रहे हैं।

अम्बिकापुर बनेगा जनआंदोलन, पत्रकारिता और सामाजिक चेतना का राष्ट्रीय केंद्र

'साउथ एशिया जन सरोकार सम्मान समारोह 2026' और 'द एक्टिविस्ट नेशनल अवार्ड 2026' का ऐतिहासिक आयोजन
जनसम्पर्क एक्सप्रेस के स्थानीय संपादक राहुल सिंह राणा होंगे 'द एक्टिविस्ट अवार्ड 2026' से सम्मानित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) शहडोल। पत्रकारिता केवल समाचारों का माध्यम नहीं, बल्कि समाज की चेतना, लोकतंत्र की मजबूती और जनआवाज को दिशा देने वाली एक सशक्त शक्ति है। जब पत्रकारिता जनसरोकारों से जुड़ती है, तब वह समाज में परिवर्तन की नई धारा प्रवाहित करती है। इसी उद्देश्य को लेकर छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक नगरी अम्बिकापुर में आगामी 30 एवं 31 मई 2026 को आयोजित होने जा रहा 'साउथ एशिया जन सरोकार सम्मान समारोह 2026' एवं 'द एक्टिविस्ट नेशनल अवार्ड 2026' देशभर के पत्रकारों, समाजसेवियों और जनआंदोलन से जुड़े लोगों का ऐतिहासिक महाकुंभ बनने जा रहा है।माता राजमोहनी भवन, अम्बिकापुर में आयोजित होने वाले इस भव्य समारोह में देशभर के पत्रकार, समाजसेवी, बुद्धिजीवी, मानवाधिकार कार्यकर्ता, कलाकार, जनप्रतिनिधि एवं सामाजिक संगठनों से जुड़े हजारों लोग शामिल होंगे। कार्यक्रम का उद्देश्य उन व्यक्तित्वों को सम्मानित करना है जिन्होंने पत्रकारिता, समाजसेवा, शिक्षा, संस्कृति, मानवाधिकार एवं जनहित के मुद्दों पर उल्लेखनीय कार्य किया है। इस ऐतिहासिक आयोजन में जनसम्पर्क एक्सप्रेस भोपाल के स्थानीय संपादक राहुल सिंह राणा को पत्रकारिता एवं जनसरोकारों के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए 'द एक्टिविस्ट अवार्ड 2026' से सम्मानित किया जाएगा। राहुल सिंह राणा पिछले लगभग दो दशकों से पत्रकारिता के क्षेत्र में सक्रिय हैं और उन्होंने अपनी निर्भीक, जनपक्षधर एवं संघर्षशील पत्रकारिता से अलग पहचान बनाई है। राहुल सिंह राणा ने अपने पत्रकारिता जीवन की शुरुआत 25 नवम्बर 2003 को स्वदेश भोपाल से की थी। इसके बाद उन्होंने संघर्षों और चुनौतियों के बीच लगातार पत्रकारिता को अपना मिशन बनाकर कार्य किया। उन्होंने दैनिक जागरण रीवा, स्टार समाचार सतना, दबंग दुनिया जबलपुर एवं अनादि टीवी भोपाल में जिला संवाददाता के रूप में महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां निभाईं। वर्ष 2022 से वे जनसम्पर्क एक्सप्रेस भोपाल में स्थानीय संपादक के रूप में लगातार कार्यरत हैं। विशेष बात यह है कि राहुल सिंह राणा ने पत्रकारिता के लगभग हर मंच पर कार्य किया है। उन्होंने प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, डिजिटल मीडिया एवं सोशल मीडिया जैसे सभी आधुनिक मीडिया प्लेटफॉर्म पर सक्रिय भूमिका निभाई है। ग्रामीण समस्याओं, सामाजिक मुद्दों, जनहित, भ्रष्टाचार, प्रशासनिक लापरवाही एवं आम जनता की आवाज़ को प्रमुखता से उठाने के कारण उन्हें क्षेत्र में एक जनपक्षधर पत्रकार के रूप में पहचान मिली है। पत्रकारिता के साथ-साथ वे समाजसेवा के कार्यों में भी निरंतर सक्रिय रहे हैं। सामाजिक जागरूकता, जनहित के मुद्दों, पत्रकार हितों एवं सामाजिक संगठनों के माध्यम से उन्होंने समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के प्रयास किए हैं। वे विभिन्न पत्रकार संगठनों में जिलाध्यक्ष एवं संभागीय अध्यक्ष जैसे महत्वपूर्ण दायित्वों का निर्वहन कर चुके हैं। वर्तमान समय में वे भारतीय श्रमजीवी पत्रकार महासंघ मध्यप्रदेश में संगठन प्रभारी के रूप में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं तथा पत्रकारों के हितों एवं संगठनात्मक मजबूती के लिए लगातार कार्य कर रहे हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता जनसरोकार ट्रस्ट की अध्यक्ष श्रीमती कविता झा एवं 'द एक्टिविस्ट' के फाउंडर आदित्य गुप्ता करेंगे। वहीं छत्तीसगढ़ शासन के कई कैबिनेट मंत्री, सांसद, विधायक एवं राष्ट्रीय स्तर की विशिष्ट हस्तियां कार्यक्रम में शामिल होकर इसकी गरिमा बढ़ाएंगी। विशेष आकर्षण के रूप में बॉलीवुड अभिनेता अजय रोहिल्ला, फिल्म निर्देशक अविनाश दास एवं अभिनेता-निर्देशक राज वर्मा की उपस्थिति कार्यक्रम को राष्ट्रीय पहचान प्रदान करेगी। साथ ही देशभर से आए वरिष्ठ पत्रकार एवं संपादक लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका और पत्रकारिता के बदलते स्वरूप पर अपने विचार साझा करेंगे। इस आयोजन में 'द एक्टिविस्ट एप्स' की लॉन्चिंग एवं 'जागरण रथ' का उद्घाटन भी किया जाएगा, जिसका उद्देश्य डिजिटल जनजागरण और सामाजिक चेतना को नई दिशा देना है। कार्यक्रम के दौरान पत्रकारिता के 200 वर्षों, सामाजिक संघर्ष, मानवाधिकार, राष्ट्र निर्माण एवं लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका जैसे विषयों पर विशेष चर्चा और विचार गोष्ठियां आयोजित की जाएंगी। अम्बिकापुर में होने जा रहा यह आयोजन केवल एक सम्मान समारोह नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना, वैचारिक जागरण और जनआंदोलन की नई दिशा तय करने वाला ऐतिहासिक मंच साबित होगा। देशभर की निगाहें अब इस आयोजन पर टिकी हैं, जहां पत्रकारिता, संघर्ष, समाजसेवा और जनसरोकार की आवाज़ एक मंच पर दिखाई देगी।

ग्राम प्रधानों द्वारा प्रशासक के रूप मे कार्यकाल बढ़ाये जाने पर मुख्यमंत्री के प्रति आभार व्यक्त किया

रायबरेली। ग्राम प्रधानों द्वारा प्रशासक के रूप मे कार्यकाल बढ़ाये जाने पर दिनेश प्रताप सिंह, राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार के माध्यम से मुख्यमंत्री के प्रति आभार व्यक्त किया। राज्य मंत्री, स्वतंत्र प्रभार दिनेश प्रताप सिंह ने पत्रकार वार्ता में बताया कि जनपद रायबरेली के छः हों विधानसभा के सभी ग्राम प्रधानों द्वारा माननीय मुख्यमंत्री जी को प्रशासक के रूप में उनका कार्यकाल बढ़ाये जाने पर राज्य मंत्री, स्वतंत्र प्रभार दिनेश प्रताप सिंह के माध्यम से अपना आभार व्यक्त किया। आज रायबरेली की सभी छः विधानसभा के ग्राम प्रधान राज्य मंत्री के आवास पर पहुंच कर फूल मालाओं और बुके भेंटकर माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के प्रति अपना आभार प्रकट किया,और राज्य मंत्री को आश्वासन दिया कि इस बार सभी विधानसभा में भारतीय जनता पार्टी का परचम लहराने का प्रयास करेंगे।

डीएम-एसपी ने ईदगाह स्थल का भ्रमण कर व्यवस्थाओं का लिया जायजा

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। जनपद में कानून-व्यवस्था को सुदृढ़ एवं ईद-उल-अजहा (बकरीद) की नमाज को शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराने के उद्देश्य से जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका व पुलिस अधीक्षक रवि कुमार ने डबल फाटक स्थित ईदगाह सहित विभिन्न प्रमुख स्थलों का स्थलीय निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान अधिकारियों ने शहर के प्रमुख मार्गों, मस्जिदों के आसपास एवं भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों का भ्रमण कर सुरक्षा, यातायात प्रबंधन, साफ-सफाई एवं अन्य व्यवस्थाओं का जायजा लिया। जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि नमाज के दौरान किसी भी प्रकार की अव्यवस्था न होने पाए तथा सभी व्यवस्थाएं समय से सुनिश्चित कराई जाएं। पुलिस अधीक्षक ने कहा कि नमाज को सकुशल एवं शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराने हेतु पर्याप्त पुलिस बल की तैनाती की गई है, संवेदनशील स्थानों पर विशेष निगरानी की जा रही है। जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक ने जनपदवासियों से अपील की कि सभी लोग आपसी सौहार्द, शांति एवं भाईचारे के साथ पर्व मनाएं तथा प्रशासन का सहयोग करें। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी (प्रशासन) सिद्धार्थ, नगर मजिस्ट्रेट राम अवतार, क्षेत्राधिकारी नगर अरुण कुमार सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

डीएम ने जनपदवासियों से पूर्ण सतर्कता एवं सावधानी बरतें की अपील, 30 मई तक तेज हवा, आंधी-तूफान, मेघगर्जन, बेमौसम भारी वर्षा एवं वज्रापात की संभावना

सतर्कता एवं सावधानी ही आपदा से बचाव का सबसे प्रभावी है माध्यम - डीएम

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) रायबरेली। मौसम विभाग, 30प्र0 एवं राहत आयुक्त कार्यालय, लखनऊ द्वारा प्रदेश के कतिपय जनपदों के साथ-साथ जनपद रायबरेली में 28 मई 2026 से 30 मई 2026 तक तेज हवा (हवा की गति 80 से 90 झोकों से बढ़कर 100 किमी/घंटा), आंधी-तूफान, मेघगर्जन, बेमौसम भारी वर्षा एवं वज्रापात की संभावना व्यक्त की गई है। उक्त संभावित मौसमीय परिस्थितियों के दृष्टिगत जिलाधिकारी सरनीत कौर ब्रोका ने जनपदवासियों से अपील की गई है कि सभी नागरिक पूर्ण सतर्कता एवं सावधानी बरतें तथा किसी भी प्रकार की आपदा जनित स्थिति से बचाव हेतु प्रशासन द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित करें। जिलाधिकारी ने बताया गया कि आंधी-तूफान, तेज वर्षा एवं वज्रापात के दौरान थोड़ी सी लापरवाही भी जनहानि एवं दुर्घटना का कारण बन सकती है। मौसम खराब होने की स्थिति में अनावश्यक रूप से घरों से बाहर न निकलें तथा अपने आसपास उपलब्ध सुरक्षित स्थानों की पहचान पहले से कर लें। यदि अचानक तेज आंधी, बारिश अथवा वज्रापात की स्थिति उत्पन्न हो जाए तो तत्काल किसी सुरक्षित पक्के भवन अथवा छत वाले स्थान पर शरण लें तथा खुले मैदान, सड़क, खेत, पेड़ अथवा बिजली के खम्भों के नीचे खड़े होने से बचें। जिलाधिकारी ने विशेष रूप से किसानों, मजदूरों, पशुपालकों एवं खुले स्थानों पर कार्य करने वाले लोगों से अपील की है कि मौसम खराब होने पर तत्काल कार्य स्थगित कर सुरक्षित स्थानों पर चले जाएँ। खेतों में कार्य करते समय मेघगर्जन एवं बिजली चमकने की स्थिति में पेड़ों के नीचे शरण न लें तथा पानी भरे खेतों एवं खुले स्थानों से दूर रहें। इसके अतिरिक्त नागरिकों से अपील की गई है कि मौसम विभाग एवं प्रशासन द्वारा जारी चेतावनियों, अलर्ट एवं एडवाइजरी का नियमित रूप से पालन करें। जिन नागरिकों के पास स्मार्ट मोबाइल फोन उपलब्ध हैं, वे 'दामिनी' एप डाउनलोड करें तथा प्राप्त सूचनाओं को अपने आसपास के लोगों तक भी पहुँचाएँ। क्या करें:-मौसम खराब होने पर तुरंत सुरक्षित पक्के भवन अथवा छत के नीचे शरण लें। मेघगर्जन एवं बिजली चमकने के दौरान घर के अंदर रहें। बिजली से चलने वाले उपकरणों को बंद कर दें। वाहन चला रहे हों तो सुरक्षित स्थान पर वाहन रोककर वाहन के अंदर ही रहें। जलभराव वाले क्षेत्रों, नदी, तालाब एवं नहरों से दूर रहें। प्रशासन एवं मौसम विभाग द्वारा जारी चेतावनियों का पालन करें। आवश्यकता पड़ने पर तत्काल 1070, 112, 108 अथवा जिला आपदा नियंत्रण के टोल फ्री नम्बरः- 1077, 0535-224084 पर संपर्क करें। बच्चों एवं बुजुर्गों को मौसम खराब होने पर घर के अंदर सुरक्षित रखें। क्या न करें:- खुले मैदान, सड़क, खेत अथवा छत पर न रुकें। पेड़, बिजली के खम्भे अथवा मोबाइल टावर के नीचे शरण न लें। बारिश एवं वज्रापात के दौरान तालाब, नदी, नहर अथवा जलभराव वाले क्षेत्रों में न जाएँ। धातु से बनी वस्तुओं, लोहे की छड़, कृषि उपकरण अथवा लोहे वाले छाते का प्रयोग न करें। मेघगर्जन के समय अनावश्यक रूप से मोबाइल फोन एवं विद्युत उपकरणों का प्रयोग न करें। समूह में खुले स्थानों पर खड़े न रहें। वाहन को पेड़ों अथवा बिजली की लाइनों के नीचे खड़ा न करें। जिलाधिकारी ने समस्त जनपदवासियों से अपील की गई है कि सतर्कता एवं सावधानी ही आपदा से बचाव का सबसे प्रभावी माध्यम है।सभी नागरिक संयम एवं जागरूकता के साथ प्रशासन द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का पालन करें तथा किसी भी आपात स्थिति में तत्काल प्रशासन को सूचित करें।

नोएडा विधायक पंकज सिंह ने सेक्टर-71 की विभिन्न सोसाइटियों का किया दौरा,समस्याओं का त्वरित समाधान होगा - पंकज सिंह

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) नोएडा। जन संवाद की कड़ी में आज नोएडा के विधायक पंकज सिंह ने सेक्टर-71 स्थित विभिन्न आवासीय सोसाइटियों का दौरा कर क्षेत्रवासियों की समस्याओं को सुना। इस दौरान उन्होंने संबंधित अधिकारियों को सभी समस्याओं के समाधान हेतु समयबद्ध एवं प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित करने के सख्त निर्देश दिए। विधायक पंकज सिंह ने जनता अपार्टमेंट, जागृति अपार्टमेंट, मेट्रो अपार्टमेंट, साईं अपार्टमेंट सहित सेक्टर-71 के विभिन्न ब्लॉकों में जाकर स्थानीय निवासियों से संवाद किया तथा पेयजल, साफ-सफाई, सीवर, सड़क एवं अन्य नागरिक सुविधाओं से जुड़ी समस्याओं की जानकारी ली।

जिला अपराध निरोधक कमेटी (यमुनानगर यूथ टीम) ईद-उल-अज़हा (बकरा ईद) विशेष

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। गुरूवार को बकरा ईद के पावन पर्व पर क्षेत्र में शांति, सुरक्षा और सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाए रखने हेतु हमारी टीम प्रातः 07:00 बजे से ही पूरी मुस्तैदी के साथ पुलिस प्रशासन के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सेवा में तत्पर रही। प्रशासनिक सहयोगः- इस सुरक्षा व्यवस्था में पुलिस प्रशासन की ओर से श्री ब्रिज किशोर गौतम (नैनी इंस्पेक्टर)श्री अमित कुमार जी (प्रभारी, एडीए चौकी) एवं श्री रामानन्द विश्वकर्मा जी (प्रभारी, काशीराम) तथा उनके पुलिस बल के साथ हमारी यूथ टीम का सराहनीय समन्वय रहा। टीम नेतृत्व एवं सक्रिय सदस्यः-यह सेवा कार्य श्री मनीष विश्वकर्मा जी के साथ रमेश लाल श्रीवास्तव (सहायक यूथ टीम प्रभारी) के कुशल मार्गदर्शन में संपन्न हुआ, जिसमें टीम के निम्नलिखित सदस्यों ने अपनी सक्रिय भूमिका निभाईः-संदीप चंद्र श्रीवास्तव (जनसंपर्क अधिकारी), विमल सक्सेना (क्षेत्रीय कमेटी प्रभारी), शिव प्रताप सिंह, रोहित सिंह, दिग्विजय सिंह, मोहम्मद अरशद, बृजेश मौर्य, अजीत प्रताप सिंह, 'जन-सुरक्षा और राष्ट्र सेवा ही हमारा संकल्प है।' जिला अपराध निरोधक कमेटी, यमुनानगर यूथ टीम नैनी (प्रयागराज)

जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग द्वारा निःशुल्क कंप्यूटर प्रशिक्षण हेतु ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी नरेंद्र कुमार पांडेय, ने मंगलवार को अवगत कराया है कि कंप्यूटर प्रशिक्षण योजनान्तर्गत भारत सरकार की अधिसूचित संस्था एवं 'O' लेवल मान्यता प्राप्त संस्थाओं के माध्यम से अन्य पिछड़ा वर्ग के युवक एवं युवतियों को निःशुल्क कंप्यूटर प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। जनपद सोनभद्र हेतु नीलिट (NIELIT) से मान्यता प्राप्त संस्थाओं द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किये जाने के लिए इच्छुक अभ्यर्थियों से ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किये गये हैं। इच्छुक अभ्यर्थी विभागीय वेबसाइट:- https://www.backwardwelfareup.gov.in तथा https://obccomputertraining.upsdc.gov.in पर उपलब्ध लिंक के माध्यम से दिनांक 20 मई 2026 से 03 जून 2026 तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। अभ्यर्थियों को निर्देशित किया गया है कि वे वेबसाइट पर उपलब्ध दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए आवेदन पत्र के साथ आवश्यक अभिलेख ऑनलाइन अपलोड करें। आवेदन की हार्ड कॉपी एवं संलग्न अभिलेखों की प्रति दिनांक 03 जून 2026 को सायं 5:00 बजे तक कार्यालय जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी, विकास भवन, लोढ़ी, सोनभद्र में अनिवार्य रूप से जमा करना होगा। जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी ने जनपद के पात्र युवक-युवतियों से समय से आवेदन कर योजना का लाभ उठाने की अपील की है।

वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से लोक निर्माण विभाग की कार्ययोजना बैठक सम्पन्न

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) सोनभद्र। बुधवार को जिलाधिकारी सोनभद्र की अध्यक्षता में लोक निर्माण विभाग की वित्तीय वर्ष 2026-27 की कार्ययोजना के संबंध में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक कल आयोजित की गई। बैठक में शासन की मंशानुरूप 150 से अधिक आबादी वाले अनजुड़े मजरों को पक्के मार्गों से जोड़ने तथा अवशेष लघु सेतु, सड़क एवं अन्य निर्माण प्रस्तावों पर विस्तृत चर्चा की गई। बैठक में मा0 राज्य मंत्री समाज कल्याण, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति उत्तर प्रदेश सरकार श्री संजीव कुमार सिंह गौंड, मा0 विधायक सदर श्री भूपेश चौबे, मा0 विधायक घोरावल डॉ. अनिल कुमार मौर्य, मा0 सदस्य विधान परिषद श्री विनीत सिंह सहित लोक निर्माण विभाग के अधिशासी अभियन्ता प्रान्तीय खण्ड, निर्माण खण्ड एवं निर्माण खण्ड-2 उपस्थित रहे। जिलाधिकारी ने कहा कि मा0 मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश सरकार की प्राथमिकता है कि जनपद के सभी पात्र मजरे पक्के मार्गों से जोड़े जाएं, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में आवागमन की बेहतर सुविधा उपलब्ध हो सके। बैठक में निर्णय लिया गया कि विधानसभावार ऐसे सभी मजरे जिनकी आबादी 150 से अधिक है और जो अब तक सड़क संपर्क से वंचित हैं, उन्हें कार्ययोजना में प्राथमिकता के आधार पर सम्मिलित किया जाएगा। इसके लिए मा0 जनप्रतिनिधियों से समन्वय स्थापित कर अवशेष सड़क, लघु सेतु एवं अन्य प्रस्तावों की सूची प्राप्त की जाएगी। इस दौरान जिलाधिकारी ने कहा कि।मा0 मुख्यमंत्री जी के जनपद भ्रमण के दौरान दिये गए निर्देश के क्रम में 150 से अधिक आबादी वाले वाले मजरों को सूची मैं प्रत्येक दशा में कार्ययोजना में सम्मिलित करने के निर्देश संबंधित अधिशासी अभियंता लोक निर्माण विभाग को दिए गए । बैठक के अंत में जिलाधिकारी ने कार्ययोजना को सफल बनाने हेतु सभी जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों का आभार व्यक्त किया।

सोनभद्र में आरओबी निर्माण से पहले लोगों का विरोध बोले बैरिकेडिंग से रास्ता बंद,'निकलने का रास्ता तो छोड़िए'

सोनभद्र। सोनभद्र के रॉबर्ट्सगंज स्थित पन्नूगंज रोड पर जोगियाबीर महाल रेलवे क्रॉसिंग पर प्रस्तावित रेलवे ओवरब्रिज (आरओबी) निर्माण कार्य शुरू होने से पहले स्थानीय लोगों ने विरोध प्रदर्शन किया। बुधवार देर शाम निर्माण कंपनी द्वारा की गई बैरिकेडिंग से रास्ता सीमित होने पर गुरुवार को लोगों का गुस्सा फूट पड़ा। स्थानीय लोगों का कहना था कि निर्माण कार्य शुरू करने से पहले मोहल्ले के लोगों के लिए कम से कम बाइक आवागमन का रास्ता छोड़ा जाना चाहिए था। प्रदर्शनकारियों ने आरोप लगाया कि बिना वैकल्पिक व्यवस्था के रास्ता बंद कर दिया गया है, जिससे रोजमर्रा की जिंदगी प्रभावित होगी।लोगों ने कहा कि यदि रास्ता पूरी तरह बंद हो गया तो बच्चों का स्कूल जाना, मरीजों को अस्पताल पहुंचाना और अन्य जरूरी कामकाज प्रभावित हो जाएंगे। प्रदर्शन के दौरान निर्माण एजेंसी और प्रशासन की कार्यशैली पर भी सवाल उठाए गए। स्थिति तनावपूर्ण होने पर निर्माण कंपनी के कर्मचारी और अधिकारी मौके पर पहुंचे और लोगों को समझाने का प्रयास किया। रेलवे निर्माण कंपनी के डिप्टी प्रोजेक्ट मैनेजर कुलदीप पवार प्रजापति ने कहा कि यह जनहित से जुड़ा बड़ा प्रोजेक्ट है और सुरक्षा मानकों का पालन जरूरी है। उन्होंने आश्वासन दिया कि बाइक आवागमन के लिए अस्थायी वैकल्पिक रास्ते पर विचार किया जा रहा है। सूचना मिलते ही भाजपा नेता धर्मवीर तिवारी भी मौके पर पहुंचे। उन्होंने कहा कि यह सड़क इलाके की लाइफ लाइन है और रॉबर्ट्सगंज को बिहार तक जोड़ने वाला प्रमुख मार्ग है। उन्होंने प्रशासन से पैदल और बाइक सवारों के लिए सुरक्षित वैकल्पिक मार्ग उपलब्ध कराने की मांग की। इधर, रेलवे की जमीन पर वर्षों से कब्जा जमाए गुमटी और अस्थायी दुकान संचालकों ने भी निर्माण कार्य को देखते हुए खुद ही अतिक्रमण हटाना शुरू कर दिया है।

किरबिल सबस्टेशन 5 साल बाद फिर चार्ज,यूपी-झारखंड ग्रिड से जुड़ा, लाखों को मिलेगी 18 घंटे बिजली

सोनभद्र। बीजपुर स्थित किरबिल सबस्टेशन का 132/33 केवीए नव निर्मित बिजली घर बुधवार आधी रात को सफलतापूर्वक चार्ज कर लिया गया। पांच साल की लंबी प्रतीक्षा और कई तकनीकी व कानूनी अड़चनों को पार करने के बाद यह सफलता मिली है। रात 23:22 बजे यूपी पावर ग्रिड कॉरपोरेशन और 23:59 बजे झारखंड पावर ग्रिड से स्टेशन को आधिकारिक तौर पर जोड़ा गया। इस नए सबस्टेशन के चालू होने से म्योरपुर और बभनी ब्लॉक से जुड़ी लगभग एक लाख आबादी को बड़ा लाभ मिलेगा। अब उन्हें पिपरी से आने वाली 33 केवीए बिजली सप्लाई में बार-बार होने वाले फाल्ट और तकनीकी खामियों से निजात मिलेगी। इसके साथ ही, राज्य सरकार के नियमानुसार ग्रामीण इलाकों में 18 घंटे निर्बाध बिजली आपूर्ति का मार्ग भी प्रशस्त हो गया है। ट्रांसमिशन लाइन के टेस्टिंग एंड कमीशनिंग एक्सईएन शिवधनी ने बताया कि किरबिल सबस्टेशन से नथिरा, बीजपुर, बभनी और जलकल उपकेंद्र के फीडरों को एक-दो दिन में जोड़कर 33 केवीए बिजली सप्लाई शुरू कर दी जाएगी। फिलहाल, कुंडाडीह उपकेंद्र पिपरी से ही संचालित होता रहेगा। अमवार और दुद्धि उपकेंद्र को अगले छह महीने के भीतर जोड़कर पोषित किया जाएगा, जिसके बाद अन्य उपकेंद्रों के कार्य पूर्ण होने पर विस्तार जारी रहेगा। इस सफलता के पीछे ट्रांसमिशन एक्सईएन इंद्रभान सिंह, एसडीओ ट्रांसमिशन रामअनन्त दूबे, अवर अभियंता जितेंद्र कुमार, टेस्टिंग एंड कमीशनिंग अवर अभियंता शैलेन्द्र कुमार, अवधेश कुमार और पंकज कुमार सहित पूरी टीम का अथक प्रयास रहा। किरबिल सबस्टेशन के निर्बाध रूप से पावर ग्रिड ट्रांसमिशन लाइन से जुड़ने की खबर मिलते ही यूपीपीसीएल के अधिकारियों और कर्मचारियों में भी प्रसन्नता देखी गई।

सोनभद्र में पति ने गला दबाकर की पत्नी की हत्या,नशे में गमछे से गला दबाने का आरोप-हिरासत में

सोनभद्र। शक्तिनगर थाना क्षेत्र के खड़िया इलाके में गुरुवार को एक व्यक्ति ने शराब के नशे में अपनी पत्नी की गला दबाकर हत्या कर दी। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और आरोपी पति को हिरासत में लेकर जांच शुरू कर दी। मृतका की पहचान आशा देवी पत्नी महेंद्र गुप्ता के रूप में हुई है। आरोपी महेंद्र गुप्ता पुत्र दशरथ गुप्ता मूल रूप से ओबरा क्षेत्र का निवासी बताया जा रहा है और वर्तमान में खड़िया क्षेत्र में किराये के मकान में रह रहा था। स्थानीय लोगों के मुताबिक, बुधवार रात पति-पत्नी के बीच किसी बात को लेकर विवाद हुआ था। आरोप है कि उस समय महेंद्र गुप्ता शराब के नशे में था। विवाद बढ़ने पर उसने गमछे से पत्नी का गला दबा दिया। घटना के बाद परिजन आशा देवी को अस्पताल ले जाने लगे, लेकिन रास्ते में ही उनकी मौत हो गई। घटना के समय आरोपी घर में ही मौजूद था। आसपास के लोगों ने पुलिस को सूचना दी, जिसके बाद पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। वहीं आरोपी पति को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। पिपरी सीओ हर्ष पांडे ने बताया-'प्रारंभिक जांच में पारिवारिक विवाद के दौरान शराब के नशे में हत्या की बात सामने आई है। उन्होंने बताया कि दंपति की शादी को करीब 25 साल हो चुके थे। पुलिस का कहना है कि तहरीर मिलने के बाद आवश्यक विधिक कार्रवाई की जा रही है। फिलहाल क्षेत्र में शांति व्यवस्था कायम है।'

NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE
कौशलं बलम्
(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)
सर्टिफिकेट इन फायर सेफ्टी एण्ड इण्डस्ट्रीयल सिक्योरिटी
फायर सेफ्टी पर जिसकी कमाण्ड, उसकी ही है ग्लोबल डिमाण्ड
कोर्स के बाद सेफ्टी सुपरवाइजर, फायर प्रोटेक्शन, सिक्योरिटी एडमिनिस्ट्रेटर आदि विभिन्न पदों पर नियुक्ति मिल जाती है। रिलीफ एजेन्सी N.G.O., डिफेन्स सर्विसेज फायर सर्विस आर्डिनेन्स फैक्ट्री, महानगर पालिका, नगर निगम, एयरपोर्ट, पावर प्लांट, स्टील प्लान्ट, माइनिंग इन्डस्ट्रीज, पेट्रोलियम कम्पनी, फूड इण्डस्ट्रीज, रिफाइनरीज, टेक्सटाइल मिल, टावर कम्पनी, इलेक्ट्रानिक कम्पनी, कोयले की खदानों एवं जहाजों आदि क्षेत्रों में फायर सेफ्टी के जानकारों को बहुत अधिक मौका मिलता है
श्री महन्तू
अग्निशमन सुरक्षा अधिकारी नैनी, प्रयागराज
नोटः फायर सेफ्टी कोर्स करें और देश -विदेश, सरकारी और प्राइवेट क्षेत्रों में अच्छे पैकेज के साथ नौकरी पायें।
Visit us at www.nainiiti.com Call: 9415608710, 7459860480
Enjoy Publicity

पूर्व निशानेबाज रणधीर सिंह का निधन,भारत को एशियाड में शूटिंग का पहला गोल्ड दिलाया, ओसीए प्रेसिडेंट बनने वाले पहले भारतीय

नयी दिल्ली। एशियन गेम्स में भारत को शूटिंग का पहला गोल्ड मेडल दिलाने वाले शूटर रणधीर सिंह का बुधवार को निधन हो गया। वे 79 साल के थे और लंबे समय से उम्र संबंधी बीमारियों से जूझ रहे थे। पूर्व निशानेबाज रणधीर ने हाल ही में स्वास्थ्य कारणों से ओलिंपिक काउंसिल ऑफ एशिया (ओसीए) के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दिया था। उन्हें 2024 में 4 साल के कार्यकाल के लिए चुना गया था। रणधीर ने 1978 बैंकॉक एशियन गेम्स के ट्रैप शूटिंग इवेंट में गोल्ड मेडल जीता था। उन्होंने 5 ओलिंपिक गेम्स और एक कॉमनवेल्थ गेम्स में भारत की ओर से हिस्सा लिया। उन्हें 1979 में अर्जुन अवॉर्ड से सम्मानित किया गया।रणधीर अपने पीछे पत्नी विनीता और 3 बेटियां (महिमा, सुनैना और राजेश्वरी) छोड़ गए हैं। उनकी बेटी राजेश्वरी इंटरनेशनल लेवल पर ट्रैप शूटिंग करती हैं। राजेश्वरी ने 2022 एशियन गेम्स में सिल्वर मेडल जीता था। रणधीर के परिवार से कई सदस्यों ने भारत को रिप्रेजेंट किया है। उनके चाचा महाराजा यादविंद्र सिंह ने भारत के लिए टेस्ट क्रिकेट खेला। वे आईओसी के सदस्य थे। रणधीर के पिता भलिंद्र सिंह भी फर्स्ट क्लास क्रिकेटर और 1947 से 1992 तक आईओसी सदस्य थे।

वैभव बोले- गेल का रिकॉर्ड पता नहीं था,बस टीम के लिए खेलना था, गेल के आगे सिर्फ सूर्यवंशी 3 रन से चूके

चंडीगढ़। राजस्थान के ओपनर वैभव सूर्यवंशी ने बुधवार को आईपीएल के एलिमिनेटर में हैदराबाद के खिलाफ 29 गेंदों में 97 रन बनाए। वे आईपीएल इतिहास का सबसे तेज शतक बनाने के क्रिस गेल (30 गेंद) के रिकॉर्ड से चूक गए। मैच के बाद वैभव से पूछा गया कि क्या उन्हें सबसे तेज शतक के रिकॉर्ड की जानकारी थी। उन्होंने कहा, 'मुझे आउट होने के बाद ही इस रिकॉर्ड के बारे में पता चला। उस समय मेरा पूरा ध्यान सिर्फ टीम के लिए ज्यादा से ज्यादा रन बनाने पर था। शतक तो आगे भी बनते रहेंगे, लेकिन अभी हमारा पूरा फोकस इस बात पर है कि टीम के लिए ट्रॉफी कैसे जीती जाए।' वैभव ने कहा, 'जब हम जीतते हैं तो हम बस उसी पॉजिटिव अप्रोच को आगे ले जाते हैं और अगले मैच पर ध्यान लगाते हैं। हमारी कोशिश अगले मैच को भी इसी तरह जीतकर फाइनल में पहुंचने की है।' वैभव का विकेट प्रफुल्ल हिंगे को मिला-वैभव सूर्यवंशी 8वें ओवर में प्रफुल्ल हिंगे की गेंद पर थर्ड मैन पर कैच दे बैठे। इस पर वैभव ने कहा- 'मैं शतक के बारे में नहीं सोच रहा था। मैंने मैदान पर मौजूद फील्डर्स को देखने के बाद वह शॉट खेला था, लेकिन टाइमिंग गलत हो गई। अगर मैंने गेंद को सीधे थर्ड मैन की तरफ जाने दिया होता, तो वह आसानी से बाउंड्री पार चली जाती।' वैभव की 4 खास बातें- उनसे पूछा गया कि क्या उनके दिमाग में यह बात थी कि यह बड़ा नॉकआउट मुकाबला है। उन्होंने कहा, 'हां, यह बात मेरे दिमाग में कहीं न कहीं जरूर थी। वैभव ने बताया- मैच से पहले सभी कोच ने मुझसे कहा था कि जो कुछ भी मैंने नेट प्रैक्टिस के दौरान किया है, ठीक वैसा ही मैदान पर करना। मुझे गेम एन्जॉय करने और एक्स्ट्रा प्रेशर न लेने की सलाह दी थी। वैभव ने कहा कि टीम इससे बड़ा स्कोर बना सकती थी। मेरे आउट होने के बाद भी मुझे ऐसा लग रहा था कि इस पिच पर 260 से ज्यादा का स्कोर बनाना मुमकिन था। अपनी बेखौफ बल्लेबाजी की तैयारी पर वैभव ने कहा कि वे मैच से पहले गेंदबाजों, विकेट और बाउंड्री साइज को लेकर होमवर्क करते हैं। उन्होंने कहा, 'मैं बस क्रीज पर पॉजिटिव रहने की कोशिश करता हूं। जब आप ऐसा करते हैं, तो गेंदबाज खुद दबाव में आ जाते हैं। मैं इसी दबदबे को बनाए रखने की कोशिश करता हूं।' गेल का 14 साल पुराना रिकॉर्ड तोड़ा-वैभव भले ही शतक से चूक गए, लेकिन उन्होंने एक सीजन में सबसे ज्यादा छक्के लगाने का क्रिस गेल का 14 साल पुराना रिकॉर्ड तोड़ दिया। वैभव के नाम इस सीजन में 65 छक्के हो गए हैं। विरोधी टीमों की प्लानिंग पर वैभव ने कहा, 'विपक्षी टीम क्या प्लान बना रही है, वह उनका काम है। मैं सिर्फ अपने प्लान पर फोकस करता हूं और नॉर्मल क्रिकेट खेलता हूं।'

गर्मियों में खराब होता पाचन, अपच, एसिडिटी की समस्या, कुछ फूड अवॉइड करें

नयी दिल्ली। क्या आपने भी नोटिस किया है कि गर्मियों में डाइजेशन अक्सर खराब हो आगे की खबर पेज संख्या 07 पर... खानपान की गलती नहीं,

बल्कि शरीर के अंदर होने वाले बदलावों का असर होता है। ज्यादा तापमान, डिहाइड्रेशन और लाइफस्टाइल की छोटी-छोटी गलतियां पाचन तंत्र की कार्यक्षमता को प्रभावित कर सकती हैं। ऐसे में सही फूड चॉइस और खाने का टाइम समझना बेहद जरूरी है।

इसलिए 'जरूरत की खबर' में आज समझेंगे कि गर्मियों में डाइजेशन क्यों कमजोर हो जाता है। साथ ही जानेंगे कि-

किन फूड्स-ड्रिंक्स को अवॉइड करना चाहिए? कौन-सी चीजें डाइजेस्टिव सिस्टम को कूल और एक्टिव रखती हैं? विषय को समझेंगे एक्सपर्टः डॉ. नरेंद्र कुमार सिंगला, प्रिंसिपल कंसल्टेंट, इंटरनल मेडिसिन, श्री बालाजी एक्शन मेडिकल इंस्टीट्यूट, दिल्ली जी के साथ ...जवाब के माध्यम से- सवाल- क्या ये फैक्ट है कि गर्मियों में पाचन तंत्र की खाना पचाने की क्षमता कम हो जाती है? जवाब- हां, गर्मियों में पाचन क्षमता प्रभावित हो सकती है। इसके पीछे वैज्ञानिक कारण हैं- गर्मी में शरीर का तापमान बढ़ता है, जिससे ब्लड फ्लो स्किन की तरफ शिफ्ट हो जाता है।इसके कारण डाइजेस्टिव ऑर्गन्स को थोड़ा कम ब्लड मिलता है। इसलिए वे पूरी क्षमता से काम नहीं कर पाते हैं। ज्यादा पसीने से डिहाइड्रेशन हो सकता है, जिससे पाचन एंजाइम्स की काम करने की क्षमता घट सकती है। सवाल- गर्मियों में डाइजेशन सिस्टम कमजोर क्यों होता है? जवाब- गर्मियों में तापमान बढ़ने पर शरीर का कामकाज प्रभावित होता है। तापमान का बढ़ना डाइजेस्टिव सिस्टम और मेटाबॉलिज्म पर असर डालता है। डाइजेस्टिव सिस्टमज्यादा गर्मी में गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल ट्रैक्ट में ब्लड सप्लाई कम होने से पाचन क्षमता घटती है। डिहाइड्रेशन के कारण गैस्ट्रिक जूस और डाइजेस्टिव एंजाइम्स का सिक्रेशन कम होने से फूड ब्रेकडाउन प्रभावित होता है। हीट स्ट्रेस गट माइक्रोब्स के बैलेंस को बिगाड़ सकता है, जिससे डायरिया या गट इंफेक्शन का रिस्क बढ़ता है। मेटाबॉलिज्म-शरीर का बेसल मेटाबॉलिक रेट गर्मी में थोड़ा कम हो सकता है क्योंकि शरीर को हीट प्रोडक्शन कम रखना होता है। ज्यादा तापमान में थायरॉइड हॉर्मोन एक्टिविटी पर हल्का असर पड़ सकता है, जिससे मेटाबॉलिक प्रोसेस धीमे हो सकते हैं। हीट के कारण इलेक्ट्रोलाइट इंबैलेंस (जैसे सोडियम-पोटेशियम) होता है, जो सेलुलर मेटाबॉलिज्म और एनर्जी प्रोडक्शन को प्रभावित करता है। सवाल- आमतौर पर गर्मियों में कौन-सी डाइजेस्टिव समस्याएं हो सकती हैं? जवाब- ज्यादा तापमान से शरीर में पानी और इलेक्ट्रोलाइट कम हो जाते हैं। डिहाइड्रेशन से पाचन एंजाइम और गट मूवमेंट प्रभावित होते हैं।गर्मी में बैक्टीरिया तेजी से बढ़ते हैं, जिससे संक्रमण का खतरा बढ़ता है। भूख कम लगने से खाने का पैटर्न बिगड़ सकता है। ऑयली और स्पाइसी खाने से पाचन पर ज्यादा दबाव पड़ता है। सवाल- गर्मियों में किन लोगों को डाइजेस्टिव समस्याओं का रिस्क ज्यादा होता है? जवाब- किसी भी हेल्थ प्रॉब्लम का रिस्क सबसे ज्यादा उन लोगों को होता है, जिनकी इम्यूनिटी कमजोर होती है। या गट इन्फेक्शन,जंक फ़ूड जो पानी कम पीते हैं,तला-भुना, मेडिसिन का ज्यादा इस्तेमाल करने वाले या बच्चे बुज़ुर्ग गर्भवती महिला वालो को। सवाल- हाई टेम्परेचर और एनवायर्नमेंटल कारणों के अलावा क्या लाइफस्टाइल और फूड हैबिट्स भी गर्मियों में डाइजेशन बिगाड़ सकती हैं? जवाब- बहुत तला-भुना भोजन पेट में ज्यादा समय तक रहता है, जिससे अपच और एसिडिटी का रिस्क होता है। पर्याप्त पानी न पीने से शरीर में डिहाइड्रेशन होता है, जो डाइजेस्टिव एंजाइम्स के सीक्रेशन और गट मूवमेंट को प्रभावित करता है। देर रात भोजन करने से सकेडियन रिद्म बाधित होती है और एंजाइम्स असंतुलित हो सकते हैं। शुगरी और कार्बोनेटेड ड्रिंक्स लेने से गैस और ब्लोटिंग की समस्या हो सकती है। लंबे समय तक बैठे रहने से मेटाबॉलिज्म धीमा हो जाता है, जिससे फूड-ब्रेकडाउन प्रभावित होता है। जल्दी-जल्दी या जरूरत से ज्यादा खाना पेट पर अतिरिक्त दबाव डालता है। ज्यादा तनाव गट-ब्रेन एक्सिस को प्रभावित कर पाचन समस्याएं बढ़ा सकता है। सवाल- गर्मियों में डाइजेशन को अच्छा रखने के लिए रोजमर्रा की लाइफस्टाइल में कौन-से बदलाव करने चाहिए? जवाब- हल्का, ताजा और सुपाच्य भोजन लेने से पाचन तंत्र संतुलित रहता है। इसके लिए कुछ बातों का खास ख्याल रखें- डाइट में फाइबर रिच फूड्स शामिल करें। रोज नियमित समय पर सोएं और जागें। 8 घंटे की अच्छी नींद लें। रेगुलर वॉक या स्ट्रेचिंग करें। बहुत गर्म भोजन या ड्रिंक से बचें। प्रोबायोटिक फूड्स जैसे दही और छाछ लें। लाइफस्टाइल में रिलैक्सेशन टेक्नीक जैसे मेडिटेशन और डीप ब्रीदिंग करें। सवाल- इस मौसम में कौन-से फूड्स और ड्रिंक्स अवॉइड करने चाहिए, जो पाचन बिगाड़ते हैं? जवाब- डीप फ्राइड फूड्स जैसे पकौड़े, समोसे और चिप्स देर से पचते हैं और हीट प्रोडक्शन बढ़ाते हैं। गर्मियों में पानी से भरपूर और सुपाच्य फूड पेट पर कम दबाव डालते हैं और डाइजेस्टिव प्रोसेस को आसान बनाते हैं। सवाल- गर्मियों में खाने का सही टाइम और पोर्शन साइज क्या होना चाहिए, ताकि पेट पर दबाव न पड़े? जवाब- सुबह उठने के 1 घंटे के भीतर हल्का नाश्ता लेने से मेटाबॉलिक प्रोसेस समय पर शुरू होता है। दिन में हर 3-4 घंटे पर छोटे मील्स लेने से गैस्ट्रिक ओवरलोड और एसिडिटी का रिस्क कम होता है। लंच को दिन का मुख्य भोजन बनाएं। इस समय डाइजेस्टिव एंजाइम्स की एक्टिविटी अपेक्षाकृत बेहतर होती है। एक बार में बहुत ज्यादा खाने की बजाय 60-70फीसदी पेट भरने का तरीका अपनाएं। सवाल- अगर गर्मियों में बार-बार अपच, उल्टी और दस्त हो तो क्या डॉक्टर को दिखाना जरूरी है?जवाब- हां, 2-3 दिनों से ज्यादा समय तक लक्षण बने रहने पर इन्फेक्शन या फूड पॉइजनिंग का रिस्क होता है। तेज बुखार, पूप में ब्लड या बहुत ज्यादा कमजोरी जैसे संकेत का मतलब मेडिकल अटेंशन की जरूरत है। बच्चों, बुजुर्गों और प्रेग्नेंट महिलाओं को जल्दी सलाह लेनी चाहिए। बार-बार अपच गैस्ट्राइटिस या इरिटेबल बाउल जैसी समस्याओं से भी जुड़ी हो सकती है। डॉक्टर जरूरत के अनुसार ओरल रिहाइड्रेशन, दवाएं या टेस्ट सलाह दे सकते हैं। समय पर इलाज से बड़ी परेशानी से बच सकते हैं।

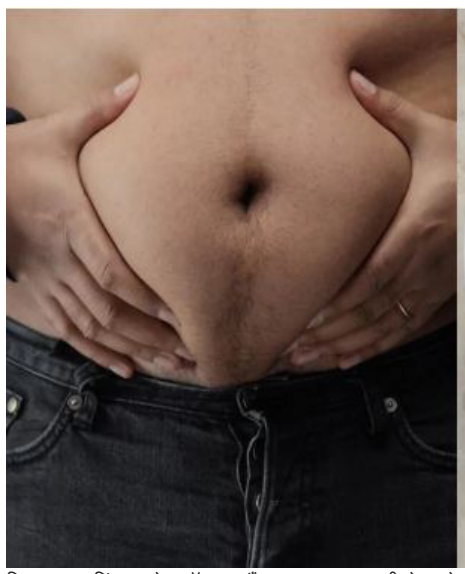

डीएनए में बदलाव करने वाली नई थेरेपी का दावा- एक खुराक से ही घट जाएगा हार्ट अटैक का खतरा?

न्यूयॉर्क। वैज्ञानिकों का दावा है कि उन्होंने जीन-एडिटिंग (डीएनए में बदलाव करने वाली)

एक नई दवा बनाई है। इस दवा की सिर्फ एक खुराक (इंजेक्शन) देने से शरीर में नुकसान पहुंचाने वाला 'खराब कोलेस्ट्रॉल' (एलडीएल) बहुत लंबे समय के लिए कम हो जाता है। 'द न्यू इंग्लैंड जर्नल ऑफ मेडिसिन' में छपे इस शोध के मुताबिक, अगर बड़े अध्ययनों में भी यही नतीजे आए तो यह थेरेपी दिल की बीमारियों से बचाव का स्थायी तरीका बन सकती है। इस अध्ययन का नेतृत्व वर्व थेरेप्यूटिक्स के सीईओ डॉ. शेखर कथिरेशन ने किया। अध्ययन के मुताबिक यह जीन थेरेपी दिल की बीमारी पर आजमाई गई है। ड्यूक यूनिवर्सिटी के हार्ट स्पेशलिस्ट डॉ. जॉन एच. पी. अलेक्जेंडर ने कहा कि दिल की बीमारी और कोलेस्ट्रॉल का स्थायी इलाज गेम चेंजर हो सकता है।रिसर्च-ज्यादा मात्रा वाली एक ही डोज में 62फीसदी घटा कोलेस्ट्रॉल-यह 85 मरीजों वाले ट्रायल का अंतरिम विश्लेषण है। फिलहाल 35 मरीजों के डेटा को देखा गया। ये मरीज आनुवंशिक रूप से हाई एलडीएल या दिल की बीमारी से पीड़ित थे। जिन मरीजों को दवा की सबसे ज्यादा खुराक दी गई, उनमें एक ही खुराक में एलडीएल 62फीसदी तक घट गया। जिन मरीजों को 18 महीने पहले थेरेपी दी गई थी, उनमें यह कम स्तर अब भी बना हुआ है। शरीर में कैसे काम करती है जीन-एडिटिंग 'मशीन'-इस इलाज में मरीज को एक जीन-एडिटिंग 'मशीन' दी जाती है, जो फैट की परत में लिपटे कणों के जरिए खून से होते हुए सीधे लिवर तक पहुंचती है। फिर यह मशीन लिवर सेल के डीएनए में जाकर 'पीसीके' नाम के जीन को ढूंढ़ती है और डीएनए में बदलाव कर देती है। कीमत पर दावा - आम इलाज का हिस्सा बनाने की कोशिश-आमतौर पर दुर्लभ बीमारियों की जीन थेरेपी की कीमत बहुत ज्यादा होती है, लेकिन मुख्य वैज्ञानिक ने कहा कि मंजूरी मिलने पर इस दवा को बेहद महंगा बनाने का मकसद नहीं है। कंपनी इसे भविष्य में सामान्य और प्राथमिक उपचार का हिस्सा बनाने की बात कह रही है। भारत में दिल की बीमारी से सालाना 28 लाख लोगों की मौत-ग्लोबल बर्डन ऑफ डिजीज की रिपोर्ट के मुताबिक दिल की बीमारियों से देश में हर साल 28 लाख से अधिक लोगों की जान जाती है। ये दवा सफल होती है तो लाखों जानें बच सकती हैं।

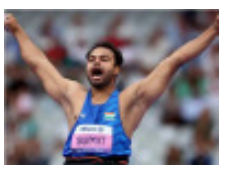

पैरा जैवलिन थ्रोअर सुमित ने अपना ही वर्ल्ड रिकॉर्ड तोड़ा,74.82 मीटर दूर भाला फेंका; दो बार पैरालंपिक में गोल्ड जीत चुके

बेंगलुरु। पैरा जैवलिन थ्रोअर सुमित अंतिल ने अपना ही वर्ल्ड रिकॉर्ड तोड़ दिया। बुधवार को बेंगलुरु में उन्होंने 74.82 मीटर का भाला फेंका। सुमित ने यह कारनामा 8वीं इंडियन ओपन पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप में पुरुषों की जैवलिन थ्रो एफ64 स्पर्धा में किया।उन्होंने पांचवें प्रयास में यह उपलब्धि हासिल की। एशियन पैरा गेम्स में 73.29 मीटर का थ्रो किया था-सुमित ने अपना ही पुराना वर्ल्ड रिकॉर्ड तोड़ा। इससे पहले उन्होंने 2023 में चीन के हांगझोउ में हुए एशियन पैरा गेम्स में 73.29 मीटर का थ्रो किया था। इस बार उन्होंने अपने पिछले बेस्ट प्रदर्शन से 1.53 मीटर ज्यादा दूरी हासिल की। एशियन गेम्स में भी इससे बेहतर प्रदर्शन करेंगे- सुमित रिकॉर्ड बनाने के बाद सुमित ने कहा, सोच रहा था कि वर्ल्ड रिकॉर्ड क्यों नहीं तोड़ पा रहा हूं। काफी समय हो गया था, लेकिन आज मैं यहां सिर्फ अपना पर्सनल बेस्ट करने आया था। उन्होंने आगे कहा, मुझे खुशी है कि मैंने अपना रिकॉर्ड 1.5 मीटर बेहतर किया। उम्मीद है कि मैं और मेरी टीम आने वाले पैरा एशियन गेम्स में भी इससे बेहतर प्रदर्शन करेंगे। 7 बार वर्ल्ड रिकॉर्ड तोड़ चुके-सुमित अब तक सात बार वर्ल्ड रिकॉर्ड तोड़ चुके हैं। उन्होंने जून 2019 में इटली में हुए वर्ल्ड पैरा एथलेटिक्स में 60.45 मीटर का

भाला फेंककर पहला वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया था। उस मुकाबले में उन्होंने सिल्वर मेडल भी जीता था। इसके बाद नवंबर 2019 में दुबई में हुए वर्ल्ड पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप में उन्होंने 62.88 मीटर का थ्रो किया। मार्च 2021 में बेंगलुरु में हुई नेशनल पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप में सुमित ने 66.90 मीटर का थ्रो कर फिर नया वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया। अगस्त 2021 में टोक्यो पैरालंपिक के फाइनल में सुमित ने एक ही मुकाबले में तीन बार वर्ल्ड रिकॉर्ड तोड़ा। उन्होंने 66.95 मीटर, 68.08 मीटर और आखिर में 68.55 मीटर का थ्रो किया। इसी प्रदर्शन के साथ उन्होंने गोल्ड मेडल जीता। इसके बाद जुलाई 2023 में पेरिस में हुए वर्ल्ड पैरा एथलेटिक्स चैंपियनशिप में सुमित ने पहली बार 70 मीटर का आंकड़ा पार किया। उन्होंने 70.83 मीटर का थ्रो कर गोल्ड मेडल अपने नाम किया। फिर 2023 में ही चीन के हांगझोउ में एशियन पैरा गेम्स में सुमित ने 73.29 मीटर का थ्रो किया। नीरज चोपड़ा से प्रेरणा मिली- सुमित-सुमित को 2021 में मेजर ध्यानचंद खेल रत्न और 2022 में पद्म श्री से सम्मानित किया गया। सुमित हरियाणा के सोनीपत से हैं और ओलिंपिक मेडलिस्ट पहलवान योगेश्वर दत्त को अपना आदर्श मानते हैं। वहीं, जैवलिन स्टार नीरज चोपड़ा से भी उन्हें काफी प्रेरणा मिली है। पैरा जैवलिन क्या है? पैरा जैवलिन दिव्यांग एथलीटों की भाला फेंक स्पर्धा है। इसमें खिलाड़ी दौड़कर भाले को ज्यादा से ज्यादा दूरी तक फेंकते हैं। इ64 पैरा एथलेटिक्स में वे खिलाड़ी शामिल होते हैं जिनका पैर घुटने के नीचे से कटा होता है। इस वर्ग के खिलाड़ी कार्बन-फाइबर से बने कृत्रिम पैर का उपयोग करते हैं। इसी की मदद से वे दौड़ते और थ्रो करते हैं।

अमेरिका में बढ़ता नस्लवाद भारतवंशी नेताओं के लिए चुनौती है

भारतीय-अमेरिकी मूल के सॉफ्टवेयर आंत्रप्रेन्योर विवेक रामास्वामी अपनी हिंदू पहचान को छिपाने की कोशिश नहीं करते। पिछले हफ्ते उन्होंने ओहायो के गवर्नर पद के लिए रिपब्लिकन पार्टी का नामांकन जीत लिया। ओहायो में राज्य विधानसभा के दोनों सदनों, गवर्नर कार्यालय और सभी प्रमुख सरकारी संस्थानों पर रिपब्लिकन पार्टी का नियंत्रण है। अमेरिकी राजनीति में गवर्नर का कद भारत के किसी मुख्यमंत्री जैसा होता है। ऐसा नहीं ?है कि रामास्वामी किसी अमेरिकी राज्य के पहले भारतीय मूल के गवर्नर होंगे। इससे पहले बॉबी जिंदल लुइसियाना के और निक्की हेली साउथ कैरोलाइना की गवर्नर रह चुकी हैं। लेकिन रामास्वामी उन दोनों से अलग हैं। जिंदल ने श्वेत ईसाई अमेरिकी समुदाय में अपनी स्वीकार्यता बढ़ाने के लिए ईसाइयत अपनाकर खुद का नाम पीयूष की जगह बॉबी रख लिया था। वहीं साउथ कैरोलाइना में एक सिख माता-पिता के घर निमरत रंधावा के रूप में जन्मीं हेली ने भी सिख धर्म छोड़कर ईसाई धर्म अपना लिया था। इनके विपरीत रामास्वामी को अपनी हिंदू पृष्ठभूमि पर गर्व है। वे शान से अपनी पत्नी अपूर्वा और बेटों कार्तिक व अर्जुन का नाम लेते हैं। जिंदल और हेली की तरह रामास्वामी भी अमेरिका में जन्मे हैं, लेकिन उन्होंने अपने बच्चों के नामों का अमेरिकीकरण करने या उनकी हिंदू धारणाओं को बदलने की कोशिश नहीं की। ईसाई धर्म अपनाने के बावजूद जिंदल और हेली अमेरिकी राजनीति में ज्यादा आगे नहीं बढ़ पाए। क्या रामास्वामी इसमें सफल होंगे?जिंदल और हेली की तुलना में आज रामास्वामी के सामने सामाजिक और राजनीतिक चुनौतियां कहीं अधिक हैं। राष्ट्रपति ट्रम्प ने नस्लवाद और वाइट सुप्रीमेसी को मुख्यधारा में ला दिया है। ट्रम्प का 'मेक अमेरिका ग्रेट अगेन' यानी 'मागा' समर्थक आधार ऐसे कम पढ़े-लिखे और बेरोजगार अमेरिकियों से बना है, जिन्हें डर है कि भारतीय और चीनी आप्रवासी उनकी नौकरियां खा रहे हैं। ओहायो में प्रचार के दौरान रामास्वामी को इतनी ऑनलाइन नस्लवादी नफरत का सामना करना पड़ा कि उन्होंने अपने इंस्टाग्राम और 'एक्स' अकाउंट का इस्तेमाल ही बंद कर दिया। ये अकाउंट अब उनकी टीम अपडेट करती है। ट्रम्प प्रशासन की आप्रवासियों के ?खिलाफ इस्तेमाल की जाने वाली भाषा ने अमेरिका में इस विषैले माहौल को और हवा दे दी है। अपने दूसरे कार्यकाल में ट्रम्प ने रामास्वामी को इलॉन मस्क के साथ 'डीओजीई' (डिपार्टमेंट ऑफ गवर्नमेंट इफिशिएंसी) का सह-प्रमुख बनाया था। लेकिन जल्द ही दोनों के बीच टकराव हो गया। रंगभेद नीति के जमाने में दक्षिण अफ्रीका में जन्मे और पले-बढ़े मस्क खुद को नस्लवादी नहीं मानते, लेकिन उनके खुद के 'एक्स' हैंडल पर वाइट सुप्रीमेसी और पश्चिमी सभ्यता को बचाने संबंधी पोस्ट भरे पड़े हैं। अमेरिका में नफरती और नस्लभेदी बयानबाजी पर 'द न्यूयॉर्क टाइम्स' में लिखे एक ?लेख में रामास्वामी ने कहा कि अमेरिकी दक्षिणपंथ में अब दो दृष्टिकोण उभर रहे हैं और दोनों ही परस्पर विरोधी हैं। एक नजरिए के मुताबि?क अमेरिकी पहचान वंश, खून और मिट्टी पर आधारित है, जहां विरासत में मिली पहचान ही सर्वाधिक मायने रखती है। इस सोच के अनुसार सबसे शुद्ध अमेरिकी वही हैं, जिनके वंश की जड़ें अमेरिका की स्थापना या उससे भी पहले की हैं। उन्होंने कहा कि श्वेत-केंद्रित पहचान को गढ़ना कुछ ऐसा था, जिसका अंदाजा पहले से था। 2022 की अपनी किताब 'नेशन ऑफ विक्टिम्स' में उन्होंने इसका अनुमान लगाया था। लेकिन बीते पांच सालों में गैर-श्वेतों से भेदभाव के चलते अब यह चंद लोगों की विचारधारा मात्र नहीं रह गई। इसके बावजूद रामास्वामी कहते हैं, आज आप अमेरिकी तब हैं, जब कानून के शासन, अंतरात्मा की स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति की आजादी, रंगभेद से रहित व्यवस्था और संविधान में विश्वास रखते हैं। ऐसे नस्लीय तनाव से भरे माहौल में ओहायो का गवर्नर चुनाव जीतना रामास्वामी के लिए बड़ी चुनौती होगा। उनका मुकाबला डेमोक्रेटिक पार्टी उम्मीदवार एमी एक्टन से है। ताजा जनमत सर्वेक्षण बताते हैं कि दोनों के बीच कांटे की टक्कर है। रामास्वामी को 48इ और एक्टन को 47फीसदी समर्थन मिल रहा है। ट्रम्प ने भी रामास्वामी को अगला गवर्नर बनाने को लेकर समर्थन दे दिया है। एक साल पहले तक यह समर्थन रामास्वामी के पक्ष में माहौल बना सकता था, लेकिन अब शायद नहीं। क्योंकि खुद ट्रम्प की लोकप्रियता ऐतिहासिक रूप से नीचे पहुंच चुकी है। महज 30% लोगों ने ही उनका समर्थन किया है। (ये लेखक के अपने विचार हैं) मिन्हाज मर्चेंट

'जो स्वयं को खो दे समाज के लिए वही पत्रकार होता है'.'समाचारों के बीच खोया हुआ एक संवेदनशील मन पत्रकार'?

लेख -राजेन्द्र सिंह जादौन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क) प्रयागराज। पत्रकारिता केवल शब्दों का व्यवसाय नहीं है, यह संवेदनाओं का वह अथाह समुद्र है जिसमें उतरने वाला व्यक्ति धीरे-धीरे स्वयं को भूलने लगता है। बाहर से देखने वालों को लगता है कि पत्रकार केवल समाचार लिखता है, कैमरे के सामने खड़ा होकर घटनाएँ बताता है या सत्ता से प्रश्न करता है, परंतु भीतर की सच्चाई इससे कहीं अधिक गहरी और पीड़ादायक होती है। पत्रकारिता दरअसल वह मौन तपस्या है जिसमें व्यक्ति अपने हिस्से का सुख, अपनी नींद, अपना चैन और कई बार अपने संबंधों तक को समाज के नाम समर्पित कर देता है।कहते हैं कि प्रेम मनुष्य को बदल देता है, पर पत्रकारिता वह प्रेम है जो मनुष्य को भीतर से पूरी तरह पुनर्जन्म दे देता है। यह केवल पेशा नहीं, एक ऐसा जुनून है जो धीरे-धीरे व्यक्ति की आत्मा में उतर जाता है। फिर वह व्यक्ति किसी भीड़ का हिस्सा नहीं रह जाता, वह समाज की धड़कनों को सुनने लगता है। किसी किसान की सूखी आँखों में उसे मौसम का अन्याय दिखाई देने लगता है, किसी मजदूर के पसीने में विकास का असली मूल्य दिखाई देता है, किसी गरीब माँ की चुप्पी उसे किसी बड़े भाषण से अधिक प्रभावशाली लगने लगती है।

पत्रकारिता व्यक्ति को संवेदनशील बनाती है, पर उसी संवेदनशीलता की कीमत भी बहुत भारी होती है। एक पत्रकार हर दिन सैकड़ों घटनाओं से गुजरता है। वह दुर्घटनाएँ देखता है, अन्याय देखता है, सत्ता का अहंकार देखता है, भूख देखता है, आँसू देखता है, और इन सबके बीच वह स्वयं को मजबूत दिखाने का अभिनय भी करता है। पर सच तो यह है कि सबसे अधिक टूटने वाला व्यक्ति वही होता है जो समाज की हर पीड़ा को भीतर महसूस करता है।

पत्रकार की जिंदगी कभी व्यवस्थित नहीं होती। उसकी सुबह किसी घटना से शुरू होती है और रात किसी ब्रेकिंग न्यूज के साथ समाप्त होती है। जब दुनिया सो रही होती है तब वह किसी सड़क पर खड़ा होकर लाइव दे रहा होता है। जब लोग त्योहारों पर अपने परिवार के साथ बैठे होते हैं तब वह किसी दुर्घटना स्थल पर कैमरे के सामने खड़ा होता है। उसकी जिंदगी में समय का कोई निश्चित अर्थ नहीं होता, क्योंकि समाज की समस्याएँ घड़ी देखकर जन्म नहीं लेतीं।पत्रकारिता व्यक्ति को अकेला भी बहुत कर देती है। क्योंकि सत्य का साथ देना आसान नहीं होता। कई बार उसे उन्हीं लोगों की नाराज़गी झेलनी पड़ती है जिनके लिए वह आवाज़ उठाता है। सत्ता उससे असहज रहती है, व्यवस्था उसे पसंद नहीं करती, और समाज भी कई बार केवल मनोरंजन चाहता है, सच नहीं। लेकिन इसके बावजूद पत्रकार लिखता रहता है, बोलता रहता है, संघर्ष करता रहता है। शायद इसलिए क्योंकि उसके भीतर कहीं न कहीं यह विश्वास जीवित रहता है कि यदि शब्द मर गए तो समाज की आत्मा भी मर जाएगी।

एक सच्चा पत्रकार केवल समाचार नहीं लिखता, वह समय का इतिहास लिखता है। उसकी कलम में केवल स्याही नहीं होती, उसमें समाज की उम्मीदें होती हैं। जब वह किसी अन्याय के विरुद्ध लिखता है तो केवल एक खबर प्रकाशित नहीं होती, बल्कि हजारों मौन लोगों को यह विश्वास मिलता है कि उनकी पीड़ा अभी पूरी तरह अनसुनी नहीं हुई।

व्यंग्य लिखने वाला पत्रकार तो और भी विचित्र स्थिति में होता है। वह मुस्कुराते हुए समाज को उसकी सच्चाई दिखाता है। उसके शब्द बाहर से हल्के प्रतीत होते हैं, पर भीतर गहरी चोट छोड़ जाते हैं। व्यंग्य वह आईना है जिसमें समाज अपना कुरूप चेहरा देखकर भी हँसने का प्रयास करता है। लेकिन उस हँसी के पीछे छिपी बेचैनी ही व्यंग्य की वास्तविक सफलता होती है।

पत्रकारिता का सबसे बड़ा संघर्ष शायद यही है कि इसमें व्यक्ति धीरे-धीरे स्वयं को खोने लगता है। वह दूसरों की लड़ाइयाँ लड़ते-लड़ते अपनी थकान भूल जाता है। वह समाज की आवाज़ बनते-बनते अपने भीतर के मौन को सुनना छोड़ देता है। फिर एक दिन ऐसा आता है जब उसे महसूस होता है कि उसका अपना जीवन भी अब खबरों, सवालों और संघर्षों में बदल चुका है।

लेकिन आश्चर्य यह है कि इसके बावजूद पत्रकारिता से प्रेम कम नहीं होता। उल्टा व्यक्ति जितना टूटता है, उतना ही गहराई से इससे जुड़ता चला जाता है। शायद इसलिए क्योंकि पत्रकारिता केवल काम नहीं, एक भावनात्मक संबंध है। यह वह रिश्ता है जिसमें व्यक्ति को सम्मान कम मिले, संघर्ष अधिक मिले, फिर भी वह इसे छोड़ना नहीं चाहता।पत्रकार जब किसी छोटे-से गाँव की समस्या को राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाता है, जब किसी गरीब को न्याय मिलता है, जब किसी भ्रष्ट व्यवस्था पर सवाल उठते हैं, तब उसे महसूस होता है कि उसका संघर्ष व्यर्थ नहीं था। यही छोटे-छोटे क्षण उसके जीवन का सबसे बड़ा पुरस्कार बन जाते हैं।आज के समय में पत्रकारिता अनेक चुनौतियों से घिरी हुई है। बाज़ारवाद, राजनीतिक दबाव, टीआरपी की अंधी दौड़ और सोशल मीडिया के शोर ने इसकी आत्मा को कई बार घायल किया है। अब खबरों से अधिक शोर बिकता है, तथ्यों से अधिक सनसनी दिखाई जाती है। लेकिन इन सबके बीच आज भी कुछ लोग ऐसे हैं जो पत्रकारिता को केवल पेशा नहीं, समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी मानते हैं। वे आज भी सच्चाई लिखने का साहस रखते हैं, चाहे उसके लिए उन्हें कितनी ही कठिनाइयों का सामना क्यों न करना पड़े।

असल में पत्रकारिता लोकतंत्र की आत्मा है। यदि समाज में प्रश्न पूछने वाले लोग समाप्त हो जाएँ, तो सत्ता निरंकुश हो जाती है और जनता धीरे-धीरे मौन। इसलिए एक सच्चा पत्रकार केवल व्यक्ति नहीं होता, वह समाज की चेतना का प्रहरी होता है।

शायद यही कारण है कि पत्रकारिता से जुड़े लोग कभी पूरी तरह सामान्य जीवन नहीं जी पाते। वे हर घटना को महसूस करते हैं, हर अन्याय पर बेचैन होते हैं और हर सत्य को सामने लाने की जिद रखते हैं। यह बेचैनी ही उनकी ताकत भी होती है और उनका सबसे बड़ा दर्द भी।

पत्रकारिता अंततः वही प्रेम है जिससे व्यक्ति कभी लौटना नहीं चाहता। क्योंकि एक बार यदि किसी ने समाज की धड़कनों को सुनना सीख लिया, यदि उसने शब्दों की ताकत को महसूस कर लिया, यदि उसने किसी मौन व्यक्ति की आवाज़ बनने का सुख पा लिया, तो फिर वह केवल अपने लिए जी ही नहीं सकता।तब उसकी जिंदगी उसकी अपनी नहीं रहती। वह समाज की हो जाती है। और शायद उसी दिन एक व्यक्ति पत्रकार नहीं रहता, स्वयं पत्रकारिता बन जाता है।

कूटनीति से कारोबार के मेल की ट्रम्प-शैली अनुचित है

यदि कोई नेता अहम कूटनीतिक जिम्मेदारियां अपने परिजनों और बिजनेस साझेदारों को सौंप दे तो ज्यादातर लोकतांत्रिक देशों में उसे भारी विरोध का सामना करना पड़ेगा। लेकिन ट्रम्प को ऐसा करने पर बहुत कम विरोध झेलना पड़ा है। कई लोग उनकी इस 'क्रोनी डिप्लोमेसी' को गैर-पारम्परिक कार्यशैली कह देते हैं। लेकिन इसके दीर्घकालिक परिणाम गंभीर हैं। विदेश मंत्री या पेशेवर कूटनीतिज्ञों पर भरोसा करने के बजाय ट्रम्प ने अहम जिम्मेदारियां अपने दामाद जैरेड कुश्नर और बिजनेस-पार्टनर स्टीव विटकॉफ को सौंप दी हैं।कुश्नर ट्रम्प के पहले कार्यकाल में भी वरिष्ठ सलाहकार थे और इजराइल तथा अरब देशों के बीच अब्राहम समझौता कराने में उनकी भूमिका रही थी। कुश्नर और विटकॉफ यूक्रेन, गाजा और ईरान पर वार्ता का नेतृत्व कर रहे हैं, लेकिन दोनों के पास ही जटिल और महत्वपूर्ण कूटनीतिक चुनौतियां हल करने का कोई पिछला अनुभव नहीं है। फिर, दोनों के हितों का टकराव भी साफ नजर आ रहा है।

चलिए, विटकॉफ से शुरू करते हैं। पिछले साल पाकिस्तान ने क्रिप्टोकरेंसी कंपनी वर्ल्ड लिबर्टी फाइनेंशियल (डब्ल्यूएलएफ) के साथ एक विवादित निवेश समझौता किया था। इस कंपनी के सीईओ विटकॉफ के बेटे जैक हैं और कंपनी में ट्रम्प और विटकॉफ परिवार की मालिकाना हिस्सेदारी है। इस साल जनवरी में इसी कंपनी से जुड़ी एक इकाई ने पाकिस्तान के साथ एक और समझौता किया। यह कंपनी द्वारा स्टेबलकॉइन शुरू करने को लेकर था, जिसका सीमा पार लेनदेन के लिए इस्तेमाल हो सके।लेकिन यूएस-ईरान के बीच पाकिस्तान में ही वार्ता हुई है और पाकिस्तान वार्ता का मध्यस्थ भी था। जब अलग-अलग पक्ष एक इलाके में भू-राजनीतिक परिणाम तय कर रहे हों और कारोबार के अवसर भी तलाश रहे हों तो कूटनीति बाजार जैसी लगने लगती है। पहुंच, प्रभाव और मुनाफा आपस में जुड़ी चीजें हैं। अब कुश्नर की बात करें तो ट्रम्प के पहले कार्यकाल के बाद उन्होंने 'एफिनिटी पार्टनर्स' नाम की एक निजी इक्विटी फर्म शुरू की और खाड़ी देशों की राजशाहियों से अरबों डॉलर जुटाए। इसमें सऊदी अरब के सॉवरेन वेल्थ फंड के करीब 2 अरब डॉलर भी शामिल हैं।यानी, कुश्नर सऊदी पूंजी पर निर्भर हैं, लेकिन इसके बावजूद उनसे उम्मीद की जा रही है कि वे ईरान के साथ संबंध सुधारने पर बातचीत करेंगे। जबकि सऊदी क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान कथित तौर पर ट्रम्प से युद्ध जारी रखने की गुहार लगा रहे हैं। कुश्नर और विटकॉफ के हितों के टकराव और विदेश नीति में उनकी अनुभवहीनता अपने आप में यह बताती है कि क्यों ट्रम्प ने उन्हें आधिकारिक कूटनीतिक पदों पर नियुक्त नहीं किया।विशेष दूतों को सीनेट द्वारा पुष्टि की प्रक्रिया से नहीं गुजरना पड़ता। पेशेवर कूटनीतिज्ञों की तरह उन पर नैतिक नियमों और संसद की निगरानी की बाध्यता भी नहीं होती। ऐसे में कुश्नर और विटकॉफ अपने प्रभाव का इस्तेमाल कर सकते हैं और बिना जवाबदेही के अमेरिका की ओर से बातचीत भी कर सकते हैं। ट्रम्प के सहयोगी लैरी एलिसन भी 'टिकटॉक' में निवेश से मोटा फायदा कमा चुके हैं।

ट्रम्प के बेटों एरिक और डोनाल्ड जूनियर ने भी हाल ही में 'पावरस' नामक ड्रोन कंपनी जॉइन की है। वे अपने पिता द्वारा शुरू किए युद्ध में ईरान के हमलों का जवाब देने के लिए खाड़ी देशों को ड्रोन इंटरसेप्टर बेचने की जुगत में हैं। अब तो ईरान युद्ध को लेकर संभावित इनसाइडर ट्रेडिंग की खबरें भी सामने आ रही हैं।बताया जाता है कि ट्रम्प के बाजार को प्रभावित करने वाले सार्वजनिक बयानों से ठीक पहले बड़े दांव लगाए गए। ऐसे घोटाले किसी भी पिछली अमेरिकी सरकार को गिरा सकते थे या कम से कम तत्काल जांच शुरू करा सकते थे, पर ट्रम्प शासन में वो आम बात हो गए हैं।यूएस-ईरान के बीच पाकिस्तान में ही वार्ता हुई और वह वार्ता का मध्यस्थ भी था। जब अलग-अलग पक्ष ए क इलाके में भू-राजनीतिक परिणाम तय कर रहे हों और कारोबार के अवसर भी खोज रहे हों तो कूटनीति बाजार जैसी लगने लगती है।(प्रोजेक्ट सिंडिकेट, ब्रह्मा चेलानी)

लड़कियों को पूछना होगा, मेरा विवाह कैसे परिवार में हो रहा है

सत्ता का सबसे खतरनाक दुरुपयोग तब नहीं होता जब अपराधी व्यवस्था का फायदा उठाते हैं, बल्कि तब होता है जब व्यवस्था से जुड़े लोग यह सीख जाते हैं कि सिस्टम को कैसे अपने पक्ष में इस्तेमाल किया जा सकता है। यही बात आम महिलाओं के लिए ट्विशा शर्मा जैसे मामलों को इतना बेचैन करने वाला बना देती है। अब यह महज एक केस, एक परिवार या अदालत की लड़ाई मात्र नहीं रह गया। यह बड़ी और असहज कर देने वाली इस सार्वजनिक बहस का हिस्सा बन गया है कि जो लोग लीगल सिस्टम को बहुत अच्छे-से जानते हैं, क्या वे ही कभी-कभार इसे हथियार के तौर पर इस्तेमाल भी कर सकते हैं? भारत ने महिलाओं के लिए मजबूत कानूनी सुरक्षा के लिए दशकों तक जंग लड़ी है और ये सुरक्षा जरूरी भी थी। पीढ़ियों तक महिलाओं को चुप कराया गया, नजरअंदाज किया गया, भ्रमित किया गया, आर्थिक बंदिशों में रखा गया और सामाजिक तौर पर शर्मिंदा किया गया। लेकिन इसी दौरान कहीं न कहीं एक दूसरा डर भी धीरे-धीरे जनमानस में घर कर गया- वो यह कि कानून-व्यवस्था भी महिलाओं पर दबाव बनाने, उन्हें डराने, नैरेटिव को नियंत्रित करने और उनकी प्रतिष्ठा धूमिल करने का औजार बन सकती है। ट्विशा शर्मा केस हमें ऐसे कठिन सवालों का सामना करने को बाध्य करता है। क्या होता है जब गिरिबाला सिंह और समर्थ सिंह जैसे आरोपी कानून से अनजान सामान्य व्यक्ति नहीं होते, बल्कि कनेक्टेड, कानून की गहरी समझ या संस्थागत नेटवर्क रखने वाले लोग होते हैं? क्या होता है जब अग्रिम जमानत जल्दी मंजूर हो जाती है, नैरेटिव तेजी से फैलने लगते हैं और लड़ाई अदालत से निकलकर सामाजिक दबाव, कानाफूसी, सिलेक्टिव लीक्स, सबूतों से छेड़छाड़ और सार्वजनिक चरित्र-हनन तक पहुंचती दिखती है?मुद्दा यह नहीं है कि किसी को कानूनन अपना बचाव करने का अधिकार है या नहीं। असल सवाल है कि क्या प्रभाव, व्यवस्था की जानकारी और प्रक्रियागत बढ़त उन महिलाओं के लिए भयावह असंतुलन पैदा कर सकता है, जो पहले ही ट्रॉमा, डर, सामाजिक कलंक और भावनात्मक थकान से जूझ रही हैं। मैं यह महज एक टिप्पणीकार के तौर पर नहीं लिख रही हूं, बल्कि मैं खुद भी ऐसी ही परेशानी भरी स्थिति से गुजर चुकी हूं। मैंने महसूस किया है कि कैसा लगता है जब कोई लीगली-कनेक्टेड आरोपी अग्रिम जमानत पा लेता है। या फिर जब कोई कथित तौर पर अपनी कानूनी जानकारी और पहुंच का इस्तेमाल कर व्यवस्थित तरीके से प्रतिष्ठा नष्ट करने का प्रयास करता है। जो लोग कानून की खामी, देरी, सुरक्षा और उसकी चुप्पी का बखूबी फायदा उठाना जानते हैं, वही जब इसे हथियार बनाते हैं तो आपको समझ आता है कि लड़ाई कितनी असमानता भरी हो सकती है। ज्यादातर महिलाओं के लिए अदालतों का माहौल पहले ही डराने वाला होता है। उस पर ताकतवर लोगों का नेटवर्क, प्रभाव, सामाजिक हैसियत, कानून की जानकारी और नैरेटिव-मैनिपुलेशन भी मिल जाए तो पूरी प्रक्रिया ही सजा जैसी प्रतीत होती है। सजा सिर्फ कानूनी नहीं रह जाती, बल्कि मानसिक, आर्थिक, सामाजिक और बेहद व्यक्तिगत बन जाती है। ऐसी स्थितियों को और खतरनाक बनाने वाली चीजें अकसर अदृश्य तरीके से सामने आती हैं। इनमें कागज पर तो कोई बड़ा उल्लंघन नहीं दिखता, लेकिन पैटर्न जरूर नजर आते हैं- सोचा-समझा विलम्ब, प्रतिष्ठा को लेकर कानाफूसी, प्रक्रियाओं के माध्यम से डराना, हताश करना और प्रभाव का इस्तेमाल करना। धीरे-धीरे महिला को लगता है कि वह महज अपनी पैरवी नहीं कर रही, अपनी मानसिक स्थिति, विश्वसनीयता, मातृत्व, चरित्र, अपने अस्तित्व तक को बचा रही है। ट्विशा शर्मा का मामला इसीलिए मायने रखता है, क्योंकि यह देश में बढ़ती एक चिंता को सामने लाता है। यह चिंता अपराध या आरोपों को लेकर नहीं, बल्कि कानून के सामने असमानता को लेकर भी है। इस प्रकरण का सबसे त्रासद पहलू यह है कि आज की युवा महिलाएं अब केवल अपने होने वाले पति के बारे में यही नहीं पूछतीं कि क्या वह एक अच्छा इंसान है? इसके साथ वे यह भी पूछ रही हैं मैं किस प्रकार के परिवार में विवाह करने जा रही हूं? क्या वहां मेरी सुरक्षा होगी? और यदि कुछ गलत हो गया, तो समाज आखिर किस पर विश्वास करेगा? जिन लोगों के पास कानून का ज्ञान और संस्थागत पहुंच है, उनकी जिम्मेदारी और अधिक होती है। अगर लोगों को यह लगने लगे कि सिस्टम प्रभावशाली लोगों से अलग और आमजन से अलग तरह का व्यवहार करता है तो उसी पल न्याय पर भरोसा कमजोर होने लगता है। (ये लेखिका के अपने विचार हैं)मेघना पंत

खालिस्तान समर्थक ने भारतीय उच्चायुक्त का काफिला रोका,गाड़ी के सामने फाड़ा तिरंगा, पैरों से रौंदने की करि कोशिश,पुलिस ने खदेड़ा

जालंधर। लोग सवाल उठा रहे हैं कि एक देश के शीर्ष राजनयिक को कनाडाई धरती पर न्यूनतम सुरक्षा भी क्यों नहीं मिल पा रही

है? कनाडाई पुलिस की मौजूदगी में एक चरमपंथी सुरक्षा घेरा तोड़कर उच्चायुक्त की गाड़ी तक कैसे पहुंच गया? उच्चायुक्त के इंटरव्यू पर मचा बवाल-मंगलवार को ही कनाडा के एक मीडिया प्लेटफॉर्म द ग्लोब एंड मेल ने एक कथित इंटरव्यू पब्लिश किया, जिसमें दावा किया गया कि भारतीय उच्चायुक्त दिनेश पटनायक ने कनाडा सरकार को चैलेंज किया है। इसमें कहा गया कि पटनायक ने कनाडाई धरती पर अपराधों में भारत सरकार की संलिप्तता के दावों को खारिज किया। साथ ही उन्होंने निज्जर केस से जुड़े आरोपों को कोरी कल्पना करार देते हुए कहा कि कनाडा की खुफिया एजेंसी खालिस्तानी अलगाववादियों के प्रभाव में आ चुकी है। पटनायक ने आरोप लगाया कि कनाडाई सुरक्षा खुफिया सेवा के कुछ हिस्से कनाडा से काम कर रहे खालिस्तानी अलगाववादी समूहों के प्रभाव में हैं। हालांकि, बाद में उच्चायुक्त ने आर्टिकल के ये दावे खारिज कर दिए। उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा- आज 'ग्लोब एंड मेल' के लेख में लगाए गए आरोपों से मैं निराश हूं। भारत ने कनाडा की कानून प्रवर्तन और सुरक्षा एजेंसियों के साथ, खासकर पिछले एक साल में, बहुत अच्छा सहयोग बनाया है। हमें कनाडा की संस्थाओं पर पूरा भरोसा है और हम इन भ्रामक आरोपों को पूरी तरह से खारिज करते हैं। कनाडा सरकार ने पलटवार किया-कनाडा के सार्वजनिक सुरक्षा मंत्री गैरी आनंदसंगारी ने भारतीय दूत के दावों पर पलटवार किया है। उन्होंने कहा कि सीएसआईएस के कॉम्प्रोमाइज्ड होने का दावा झूठा है और यह कनाडाई सुरक्षाकर्मियों के काम को कमतर आंकता है। सिख फॉर जस्टिस और इसके समर्थक गोसल के बारे में जानिए- गुरपतवंत सिंह पन्नू ने बनाया संगठन-सिख फॉर जस्टिस अमेरिका आधारित एक चरमपंथी और अलगाववादी संगठन है, जो भारत के पंजाब राज्य को अलग कर खालिस्तान नामक एक स्वतंत्र देश बनाने की वकालत करता है। भारत सरकार ने इसे देश की संप्रभुता और अखंडता के लिए खतरा मानते हुए एक गैरकानूनी और आतंकवादी संगठन घोषित किया हुआ है। इस संगठन की शुरुआत वर्ष 2009 में अमेरिका में हुई थी। इसका मुख्य संचालक गुरपतवंत सिंह पन्नू है, जो पेशे से वकील है और अमेरिका-कनाडा की दोहरी नागरिकता रखता है। भारत सरकार ने पन्नू को व्यक्तिगत रूप से भी आतंकवादी घोषित किया हुआ है। यह संगठन कनाडा, ब्रिटेन, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया में बसे सिख प्रवासियों के बीच कथित खालिस्तान के समर्थन के लिए गैर-बाध्यकारी जनमत संग्रह कराता रहता है। हालांकि, इन आयोजनों की कोई कानूनी या कूटनीतिक मान्यता नहीं होती। एसएफजे सोशल मीडिया से पंजाब के युवाओं को भड़काने और कट्टरपंथी बनाने का प्रयास करता है। खालिस्तान समर्थक है इंदरजीत सिंह गोसल-इंदरजीत सिंह गोसल कनाडा में सक्रिय एक प्रमुख खालिस्तान समर्थक और चरमपंथी है। वह भारत सरकार द्वारा प्रतिबंधित संगठन एसएफजे का मुख्य कनाडाई समन्वयक और आयोजक है। उसे घोषित आतंकवादी गुरपतवंत सिंह पन्नू का बेहद करीबी और राइट हैंड माना जाता है। जून 2023 में ब्रिटिश कोलंबिया में खालिस्तानी चरमपंथी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या के बाद, गोसल ने कनाडा में एसएफजे के संचालन और कमान की मुख्य जिम्मेदारी संभाली। वह कनाडा में कथित खालिस्तान जनमत संग्रह आयोजित कराने का मुख्य चेहरा बन गया। वह पन्नू के निजी सुरक्षा अधिकारी के रूप में भी काम कर चुका है। नवंबर 2024 में कनाडा के ब्रैम्पटन में एक हिंदू मंदिर के बाहर श्रद्धालुओं पर हुए हिंसक हमले और विरोध प्रदर्शनों में गोसल मुख्य साजिशकर्ताओं में शामिल था। कनाडाई पुलिस (पील रीजनल पुलिस) ने हिंदू-कनाडाई नागरिकों को डराने-धमकाने और हिंसा फैलाने के आरोप में उसे गिरफ्तार किया था, लेकिन बाद में वह शर्तों पर रिहा हो गया। सितंबर 2025 में ओंटारियो पुलिस ने गोसल को उसके साथियों के साथ बिना लाइसेंस के अवैध हथियार रखने के आरोप में दोबारा गिरफ्तार किया। यह गिरफ्तारी भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल और उनके कनाडाई समकक्ष के बीच हुई एक उच्च-स्तरीय बैठक के ठीक बाद हुई थी, जिसे भारत के कूटनीतिक दबाव का असर माना गया। हालांकि, इसके कुछ ही समय बाद उसे कनाडाई अदालत से जमानत मिल गई।

फ्रांस में सैकड़ो स्कूलों में चाइल्ड एब्यूज स्कैंडल,3 साल की बच्ची का 'मॉनिटर' ने रेप किया, केस की खुली सुनवाई शुरू

पेरिस। परिवारों के वकीलों के मुताबिक वे गिसेल पेलिको के चर्चित रेप केस से प्रेरित थे। गिसेल ने

कहा था कि 'शर्म पीड़ितों नहीं, अपराधियों को होनी चाहिए।' कोर्ट में शुरू हुआ पहला बड़ा ट्रायल-स्कैंडल से जुड़े पहले बड़े मामलों में से एक का ट्रायल इस हफ्ते पेरिस में शुरू हुआ। 36 वर्षीय स्कूल सहायक डेविड जी. पर सितंबर 2024 से अप्रैल 2025 के बीच 3 से 5 साल के पांच बच्चों के यौन शोषण और दो महिला सहकर्मियों के साथ यौन उत्पीड़न का आरोप है। हालांकि, आरोपी ने सभी आरोपों से इनकार किया है। जांचकर्ताओं के मुताबिक बच्चों ने पुलिस को अपने शब्दों में अनुचित छूने की घटनाएं बताईं। अगर दोष साबित हुए तो आरोपी को 10 साल तक की जेल और 1.5 लाख यूरो तक जुर्माना हो सकता है। बच्चों में दिखा गंभीर मानसिक असर-कुछ अभिभावकों ने कहा कि उनके बच्चों में लंबे समय से डर और मानसिक तनाव के संकेत दिख रहे थे। एक वकील ने बताया कि 3 साल का एक बच्चा स्कूल जाने से डरने लगा था। आरोप है कि उसके साथ हिंसा करने वाले मॉनिटर के खिलाफ पहले भी शिकायतें थीं। प्रशासन पर बढ़ा दबाव-मामले सामने आने के बाद पेरिस प्रशासन पर दबाव बढ़ गया है। अधिकारियों के मुताबिक 2026 के पहले तीन महीनों में 78 स्कूल सहायकों को सस्पेंड किया गया, जिनमें 31 पर यौन शोषण के आरोप हैं। फ्रांस की स्वतंत्र संस्था ण्ध्द्म्ध्र्‌ के अनुसार देश में हर साल करीब 1.6 लाख बच्चे रेप या यौन शोषण का शिकार होते हैं। फ्रांस में स्कूल मॉनिटर कौन होते हैं? फ्रांस में स्कूल मॉनिटर, जिन्हें एनिमेटर या पेरिस्कोलर स्टाफ भी कहा जाता है, स्थानीय नगर प्रशासन द्वारा नियुक्त कर्मचारी होते हैं। ये सीधे फ्रांस के शिक्षा मंत्रालय के अधीन नहीं होते। इनकी जिम्मेदारी नर्सरी और प्राइमरी स्कूलों में 3 से 11 साल तक के बच्चों की निगरानी करना होती है। ये बच्चों को लंच ब्रेक, दोपहर की नींद, खेलकूद और आफ्टर-स्कूल गतिविधियों के दौरान संभालते हैं। ये शिक्षक नहीं होते, बल्कि खेल, क्राफ्ट और मनोरंजन गतिविधियां संचालित करते हैं।

वहीं सेकेंडरी स्कूलों (कॉलेज और हाई स्कूल) में अनुशासन, सुरक्षा और अनुपस्थिति की निगरानी 'स्कूल लाइफ' स्टाफ करता है, जो विशेष प्रशासनिक अधिकारियों के अधीन काम करता है। फ्रांस में तीन साल की उम्र से स्कूल जाना जरूरी है। इसलिए नर्सरी और प्राइमरी स्कूलों में छोटे बच्चे दिन का बड़ा हिस्सा इन मॉनिटर्स के साथ बिताते हैं। मॉनिटर्स सीधे शिक्षा मंत्रालय या स्कूल के कर्मचारी नहीं होते। इन्हें स्थानीय प्रशासन, नगर परिषद या सिटी हॉल की तरफ से भर्ती किया जाता है। अब यह सिस्टम विवादों में है। ऐसा कहा जा रहा है कि मॉनिटर्स की भर्ती प्रक्रिया बहुत कमजोर है। कई लोगों को बिना खास ट्रेनिंग, मनोवैज्ञानिक जांच या पेशेवर डिग्री के काम पर रख लिया जाता है। बड़ी संख्या में लोग अस्थायी या घंटे के हिसाब से काम करते हैं, इसलिए निगरानी और जवाबदेही भी कमजोर रहती है। क्या है क्षशऊददएम्प्ददत आंदोलन? क्षशऊददएम्प्ददत फ्रांस का एक अभिभावक और सामाजिक आंदोलन है, जो स्कूलों में बच्चों के खिलाफ यौन शोषण, हिंसा और उत्पीड़न के मामलों को सामने लाने और पीड़ितों को न्याय दिलाने की मांग करता है। पीड़ित परिवारों ने आरोप लगाया कि शुरुआती शिकायतों को स्कूल प्रशासन ने नजरअंदाज कर दिया था। पेरिस की प्रॉसिक्यूटर लॉर बेको के मुताबिक राजधानी में 84 नर्सरी स्कूल, 20 प्राइमरी स्कूल और 10 डे-केयर सेंटरों में जांच चल रही है। पेरिस के मेयर इमैनुएल ग्रेगोयर ने बताया कि 2026 की शुरुआत से अब तक 78 स्कूल और आफ्टर-स्कूल कर्मचारियों को सस्पेंड किया गया है। इनमें 31 पर यौन हिंसा के आरोप हैं। उन्होंने बच्चों के खिलाफ अपराध रोकने के लिए 2 करोड़ यूरो की योजना की घोषणा की है। आगे क्या? फ्रांस सरकार स्कूलों और डे-केयर सेंटरों में सुरक्षा नियम कड़े कर सकती है। बच्चों के साथ काम करने वाले स्टाफ की जांच और बैकग्राउंड वेरिफिकेशन बढ़ाए जाने की संभावना है। आने वाले महीनों में और ट्रायल और गिरफ्तारी हो सकती हैं।

बांग्लादेश में 700 किलो वाले ट्रम्प भैंसे की कुर्बानी रुकी,तीन लाख रुपए में ईद के लिए नीलाम हुआ था, अब नेशनल जू भेजा गया

ढाका। बांग्लादेश में डोनाल्ड ट्रम्प नाम से मशहूर सफेद भैंसे

की ईद पर कुर्बानी रोक दी गई है। इस भैंसे को 3.85 लाख टका (करीब 3 लाख रूपए) में बेचा गया था। न्यूज एजेंसी एएनआई के मुताबिक, भैंसे को जिंजिरा

के रसूलपुर इलाके के रहने वाले मोहम्मद शोरोन ने 23 मई को ईद-उल-अजहा पर कुर्बानी के लिए खरीदा था। इससे पहले यह राजधानी ढाका के पास

नारायणगंज स्थित रबेया एग्रो फार्म में रह रहा था। 700 किलो के इस भैंसे की कीमत 550 टका प्रति किलोग्राम लगाई गई थी। जब भैंसे की लोकप्रियता बढ़ी, तो सरकार का ध्यान भी उसकी तरफ गया। इसके बाद बांग्लादेश के गृह मंत्रालय ने बुधवार को कुर्बानी रोकने का आदेश दिया। खरीदार के पूरे पैसे वापस किए जाएंगे-गृह मंत्री सलाहुद्दीन अहमद ने अधिकारियों से यह भी कहा कि जिस व्यक्ति ने कुर्बानी के लिए यह भैंसा खरीदा था, उसे उसके पूरे पैसे वापस किए जाएं। फिलहाल इस भैंसे को बांग्लादेश नेशनल जू में रखा गया है। जू प्रशासन ने उसके लिए अलग बाड़ा तैयार किया है और उसकी देखभाल के लिए खास कर्मचारी भी लगाए गए हैं। जू के क्यूरेटर अतीकुर रहमान ने बताया कि भैंसे को फिलहाल दो हफ्ते तक निगरानी और क्वारंटीन में रखा जाएगा। इसके बाद आम लोग उसे जू में देख सकेंगे। सुनहरे बालों के कारण वायरल हुआ भैंसा-इस भैंसे की सबसे खास बात उसके सिर पर मौजूद सुनहरे बालों का गुच्छा है, जो काफी हद तक अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के हेयरस्टाइल जैसा दिखता है। इसी वजह से लोगों ने मजाक-मजाक में उसका नाम डोनाल्ड ट्रम्प रख दिया था। वायरल होने के बाद लोगों की भारी भीड़ फार्म पर जमा होने लगी थी। सोशल मीडिया इन्फ्लूएंसर्स ने इसे और लोकप्रिय बना दिया जिसके बाद इसकी चर्चा पूरी दुनिया में होने लगी। बांग्लादेश में सफेद या एल्बिनो भैंसे बेहद दुर्लभ माने जाते हैं। वहां ज्यादातर काले रंग के जानवर ही देखने को मिलते हैं। ऐसे में इस भैंसे का अलग रंग और उसके सिर के सुनहरे बाल लोगों के लिए आकर्षण का बड़ा कारण बन गए। एल्बिनो नस्ल के जानवरों के शरीर में मेलेनिन नाम का पिगमेंट बहुत कम या बिल्कुल नहीं बनता। यही पिगमेंट त्वचा, बाल और आंखों को रंग देता है। इसकी कमी की वजह से ऐसे जानवरों का रंग सफेद या हल्का गुलाबी दिखता है। एक्सपर्ट्स के मुताबिक हजारों सामान्य पशुओं में कभी-कभी एक एल्बिनो जन्म लेता है। इनकी त्वचा और आंखें संवेदनशील होती हैं, इसलिए इन्हें धूप, संक्रमण और त्वचा संबंधी बीमारियों से ज्यादा खतरा रहता है।

आरपीएससी ने सहायक अभियोजन-अधिकारी के 371 पदों पर निकाली वैकेंसी,8 जून से 7 जुलाई तक किए जा सकेंगे आवेदन- जानिए- फार्म भरने के लिए क्या हैं जरूरी योग्यताएं

अजमेर। आरपीएससी ने सहायक अभियोजन अधिकारी

(गृह विभाग-अभियोजन) के 371 पदों पर भर्ती के लिए विज्ञापन जारी किया है। इन पदों के लिए ऑनलाइन आवेदन 8 जून से 7 जुलाई तक किए जा सकेंगे। इस भर्ती की प्रारंभिक परीक्षा का आयोजन 2 सितंबर को किया जाना प्रस्तावित है। आयु सीमा 1 जनवरी 2027 को न्यूनतम 21 साल और अधिकतम 40 साल से कम होनी चाहिए। आयोग द्वारा यह पद 2024 में विज्ञापित किए गए थे। इसके बाद आयु की गणना 1 जनवरी 2025 को आधार मानकर की गई। इसके बाद इन पदों के लिए कोई विज्ञापन जारी नहीं किया। इसलिए अभ्यर्थियों को अधिकतम आयु सीमा में एक साल की अतिरिक्त छूट दी जाएगी। अभ्यर्थियों का चयन प्रतियोगी परीक्षा के माध्यम से किया जाएगा। प्रतियोगी परीक्षा दो चरणों में प्रारम्भिक परीक्षा व मुख्य परीक्षा के रूप में ली जाएगी। सामान्य (अनारक्षित) और राजस्थान के क्रीमीलेयर श्रेणी के अन्य पिछड़ा वर्ग/अति पिछड़ा वर्ग के आवेदक के लिए 600 रुपए। राजस्थान के नॉन क्रीमीलेयर श्रेणी के अन्य पिछड़ा वर्ग/अति पिछड़ा वर्ग, आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग और दिव्यांग के लिए 400 रुपए।ऐसे करें अप्लाई:-अभ्यर्थियों को आयोग की वेबसाइट https://rpsc.rajasthan.gov.in पर अप्लाई ऑनलाइन लिंक पर क्लिक करना होगा या एसएसओ पोर्टल https://sso.rajasthan.gov.in से लॉगिन करना होगा। इसके बाद सिटीजन एप (जी2सी) में रिक्रूटमेंट पोर्टल का चयन कर वन टाइम रजिस्ट्रेशन (ओटीआर) करना होगा। पहली बार ओटीआर करने के लिए अभ्यर्थी का नाम, पिता का नाम, जन्म तिथि, लिंग, सेकेंडरी/समकक्ष परीक्षा, आधार कार्ड/पैन कार्ड/वोटर कार्ड/ड्राइविंग लाइसेंस में से किसी एक आई.डी. प्रूफ की डिटेल और डॉक्युमेंट अपलोड करना जरूरी है। लॉगिन कर सिटीजन एप में उपलब्ध रिक्रूटमेंट का चयन कर अपने ओटीआर नंबर के आधार पर ऑनलाइन आवेदन करें। वन टाइम रजिस्ट्रेशन करने के बाद ओटीआर प्रोफाइल में किसी भी प्रकार का परिवर्तन किया जाना संभव नहीं होगा।

स्टीफन को उनके पिता 'बिना विजन वाला' लड़का समझते थे,वैज्ञानिक के बारे में पिता फ्रैंक की डायरी

लंदन। दुनिया को ब्लैक होल और ब्रह्मांड के कई रहस्यों को

लेकर चौंकाने वाला खुलासा हुआ है। हॉकिंग के पिता फ्रैंक हॉकिंग की सामने आई गोपनीय डायरी से पता चला है कि फ्रैंक बेटे (स्टीफन) के भविष्य को लेकर बेहद निराश और चिंतित थे। वे हॉकिंग को 'कमजोर' और 'बिना किसी विजन' वाला लड़का समझते थे। फ्रैंक ने 1961 में डायरी में लिखा, 'स्टीफन घर में यूं ही घूमता रहता है, कुछ करने की कोशिश नहीं करता है। ज्यादा पढ़ता नहीं।' फ्रैंक की ये डायरी पहली बार सामने आई है। कोडवर्ड में लिखे गए कुछ हिस्सों को भौतिक वैज्ञानिक ग्राहम फार्मेलो ने डीकोड किया है। उन्होंने 2 लाख से ज्यादा शब्दों का अनुवाद किया। फार्मेलो के अनुसार, संक्रामक रोग विशेषज्ञ रहे फ्रैंक ने लिखा, 'इसोबेल (पत्नी) का मानना है कि स्टीफन पिता के सामने 'हीन भावना' से ग्रस्त होता है, जबकि इसकी जरूरत नहीं है।' फ्रैंक के मुताबिक, स्टीफन को लगता था कि फिजिक्स, आर्ट्स से कमतर है। फ्रैंक ने इसे 'बड़े अफसोस की बात' कहा। 1967 में फ्रैंक ने डायरी में लिखा है, 'स्टीफन से बातचीत मुश्किल है, उसकी बोलने की गति बहुत धीमी है

कर सकता हूं, करूंगा। लेकिन मुझे उसके साथ रहना अच्छा

नहीं लगता है।' दरअसल, 1963 में 21 साल की उम्र में स्टीफन के मोटर न्यूरॉन बीमारी से पीड़ित होने का पता चला था। तब डॉक्टरों ने कहा था कि स्टीफन दो साल से ज्यादा नहीं जी पाएगा। स्टीफन ने इसे गलत साबित किया। वे व्हीलचेयर पर रहे और 2018 में 76 साल की उम्र में उनका निधन हुआ। स्टीफन ने 'ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ टाइम' जैसी किताब लिखी, जिसकी 1.30 करोड़ से अधिक प्रतियां बिकीं। हॉकिंग ने डॉक्टरों के साथ ही दुनिया को भी चौंकाया-व्हीलचेयर पर रहते

किया। स्पेस, टाइम और ब्लैक होल के ऐसे रहस्यों को

उजागर किए, जिसने ब्रह्मांड को देखने का इंसानी नजरिया बदल दिया। स्टीफन ने लिखा, 'जीवन चाहे कितना भी कठिन लगे, ऐसा कुछ न कुछ जरूर है जो आप कर सकते हैं और उसमें सफल हो सकते हैं।

महत्वपूर्ण यह है कि आप हार न मानें।' उनकी जीवनी में खास वाक्य है- '21 की उम्र में मेरी उम्मीदें शून्य हो गई थीं। उसके बाद सब कुछ बोनस रहा।'

पाकिस्तान में 9 इस्लामिक जगहों के नाम नहीं बदलेंगे,हिंदू-सिख दौर का नाम रखा जाना था, कट्टरपंथियों के विरोध के बाद रुका फैसला

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के पंजाब प्रांत की मरियम नवाज सरकार ने लाहौर की सड़कों, चौकों और इलाकों के पुराने नाम बहाल करने का फैसला फिलहाल टाल दिया है। सरकार जिन नामों को बहाल करना चाहती थी, उनमें कई हिंदू और सिख दौर के नाम शामिल थे। सरकार ने यह कदम कट्टरपंथी समूहों और सोशल मीडिया पर बढ़ते विरोध के बाद उठाया। कुछ लोगों ने इसे हिंदू और सिख पहचान वापस लाने की कोशिश बताते हुए धार्मिक रंग दे दिया था।लाहौर के डिप्टी कमिश्नर कैप्टन (रिटायर्ड) मोहम्मद अली एजाज ने पाकिस्तानी अखबार डॉन से कहा कि अभी कोई अंतिम फैसला नहीं लिया गया है। 16 मार्च को लाहौर हेरिटेज एरियाज रिवाइवल की बैठक हुई थी। इसकी अध्यक्षता पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने की थी। पंजाब की मुख्यमंत्री मरियम नवाज भी इसमें शामिल थीं। इसी बैठक में लाहौर के कई पुराने प्री-पार्टिशन नाम बहाल करने का प्रस्ताव पास किया गया। यह योजना लाहौर की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान को फिर से सामने लाने के लिए बनाई गई थी। बाद में मई में मरियम नवाज कैबिनेट ने भी इस प्रोजेक्ट को मंजूरी दे दी थी। नवाज शरीफ का कहना था कि हमें यूरोप से सीख लेनी चाहिए। वे ऐतिहासिक नामों से छेड़छाड़ नहीं करते हैं। मरियम का कहना था कि लाहौर का इतिहास ही इसकी पहचान है। पुराने नाम और इमारतें इसका सबूत हैं। यह पूरा प्रोजेक्ट लाहौर अथॉरिटी फॉर हेरिटेज रिवाइवल के तहत चलाया जा रहा था। न्यूज एजेंसी पीटीआई के मुताबिक, यह कई अरब पाकिस्तानी रुपए का प्रोजेक्ट है। कट्टपंथियों ने इसे धार्मिक मुद्दा बना दिया-डॉन की रिपोर्ट के मुताबिक, कुछ कट्टरपंथी तत्वों और सोशल मीडिया ब्लॉगर्स ने इस फैसले पर मुख्यमंत्री मरियम नवाज का खुलकर विरोध किया। उन्होंने सरकार पर हिंदू और सिख नाम वापस लाने का आरोप लगाया और इसे धार्मिक मुद्दा बना दिया।

4 साल के बेटे को कभी डांटा-मारा नहीं,अब वो बहुत जिद्दी हो गया है, बच्चे को बिना डांटे प्यार से डिसिप्लिन कैसे सिखाएं

जयपुर। बच्चे को न डांटना एक समझदार पेरेंटिंग है। लेकिन यहां देखने वाली दो जरूरी बातें हैं- बिना डांट-मार के बच्चे की परवरिश करना। बिना बाउंड्री,

डिसिप्लिन के बच्चे की परवरिश करना। विषय को समझेंगे सवाल जवाब के माध्यम से एक्सपर्टः डॉ. अमिता श्रृंगी, साइकोलॉजिस्ट, फैमिली एंड चाइल्ड काउंसलर, जयपुर जी के साथ। सवाल- मैं नई दिल्ली से हूं। मेरा बेटा 4 साल का है। जब वह पैदा हुआ तो हम चाइल्ड साइकोलॉजी की काफी किताबें पढ़ते थे। उसमें लिखा था कि बच्चों को बिल्कुल डांटना नहीं चाहिए। अभी वह चार साल का है और इन सालों में हमने कभी उसके सामने आवाज ऊंची नहीं की, उसे कभी डांटा नहीं। लेकिन अब वह काफी जिद्दी हो गया है। उसके मन का न हो तो रो-रोकर घर सिर पर उठा लेता है। हमें समझ नहीं आ रहा कि उसे कैसे हैंडल करें क्योंकि हम डांटना नहीं चाहते। प्लीज हमें गाइड करें। जवाब- सवाल पूछने के लिए शुक्रिया। बच्चे को डांटना, मारना नहीं है। लेकिन सही-गलत और डूज-डोंट्स का फर्क समझाना जरूरी है। इसे समझाने का तरीका क्या हो, यही समझने की जरूरत है। आपने अब तक बहुत धैर्य और समझदारी से पेरेंटिंग की है। लेकिन 'कभी न डांटना' और 'कोई लिमिट न तय करना' इन दोनों में फर्क होता है। बच्चे के मनोविज्ञान से जुड़ी कुछ बुनियादी बातें समझना जरूरी है। जैसेकि- 4 साल की उम्र में बच्चे-अपनी इच्छाएं जताना और अपने जीवन पर कंट्रोल सीखते हैं। वो अपनी इंडिपेंडेंस एक्सप्रेस करना चाहते हैं। उन्हें सही-गलत का बोध नहीं होता। वे इमोशंस को रेगुलेट करना नहीं जानते। उनके लिए डूज और डोंट की कोई बाउंड्री नहीं होती। वे जो भी करना या पाना चाहते हैं, उसकी कोशिश करते हैं। अगर मन की मुराद पूरी न हो तो जिद करते, रोते हैं। जो तरीका काम करता है, उसे बार-बार दोहराते हैं। जैसे एक बार रोने पर खिलौना मिल गया तो हर बार कोई भी चीज लेने के लिए रोएंगे। उनके दिमाग में ये मैसेज फीड हो जाता है- 'रोना = जीत' इस सिचुएशन को पेरेंट्स कैसे हैंडल करते हैं? वे दो तरीके अपनाते हैं- बच्चे को डांटते हैं, डराते हैं या सजा देते हैं। कुछ पेरेंट्स हाथ भी उठा देते हैं। कुछ पेरेंट्स, जो डांट, मार, सजा का रास्ता नहीं चुनना चाहते, वे पहले प्यार से समझाने की कोशिश करते हैं। जब बच्चा नहीं मानता, फिर उसकी जिद मान लेते हैं। लेकिन हमें करना क्या चाहिए-डांटें नहीं, लेकिन स्पष्ट सीमा तय करें। डूज और डोंट्स की क्लीयर बाउंड्री बनाएं। कुछ उदाहरणः-बच्चा दूसरी टॉफी के लिए जिद कर रहा है। वो रो रहा है, पैर पटक रहा है। पूरा घर सिर पर उठा रखा है। आप क्या करेंगे- बच्चे को रोने दें। जिद न मानें। बीच में वो शांत हो तो उससे बात करें। कहें- 'बेटा, रोने, पैर पटकने से टॉफी नहीं मिलेगी। कब-कितनी मिलेगी, इस पर हम बात कर सकते हैं।' बच्चे के साथ बैठकर, बात करके रूल बनाएं। कहें-

'दिन में दो टॉफी मिलेंगी। टाइम तुम खुद डिसाइड करो।' गोल्डन रूल- जिद से पिघलें नहीं। स्ट्रिक्ट रहें। प्यार से, शांति से लेकिन लॉजिक से बात करें। अपने व्यवहार से बच्चे को ये मैसेज दें कि घर में रूल सबके लिए है। रूल मम्मी-पापा के लिए भी है। मम्मी-पापा जिस काम के लिए बच्चे को मना करते हैं, वो काम खुद भी नहीं करते। बच्चे की जिद की असल वजह समझें - बच्चों की जिद को पेरेंट्स सिर्फ बिहेवियरल प्रॉब्लम मान लेते हैं, जबकि इसके पीछे कई साइकोलॉजिकल, पेरेंटिंग और एनवायर्नमेंटल कारण छिपे होते हैं। अगर इन कारणों को सही तरीके से समझ लिया जाए, तो बच्चे के व्यवहार को संभालना आसान हो जाता है। समझिए बच्चे आखिर जिद क्यों करते हैं-समस्या 'जिद' नहीं, 'सिखाने का तरीका' है 4 साल की उम्र में बच्चा- अपनी इच्छाएं एक्सप्रेस करना सीख रहा होता है। 'ना' को स्वीकार करना नहीं जानता है। इमोशंस (गुस्सा, निराशा) कंट्रोल नहीं कर पाता है। इसलिए जब उसकी बात नहीं मानी जाती, तो वह रोकर, चिल्लाकर रिएक्ट

करता है। इसका मतलब ये नहीं कि बच्चा बिगड़ गया है। इसका मतलब है कि उसे इमोशन मैनेज करना सिखाना बाकी है। तो क्या बच्चे को डांटना सही है? डांटना, चिल्लाना, डराना, शर्मिंदा करना गलत है। लेकिन हल्का, शांत और सीमाएं तय करने वाला टोन जरूरी है। जैसे- 'तुरंत चुप हो जाओ' कहने की बजाय बच्चे से कहें- 'मुझे पता है तुम नाराज हो, लेकिन रोकर चीजें नहीं मिलतीं।' इसमें फर्क सिर्फ ये है कि बच्चे को डांटना नहीं, गाइड करना है। असली जरूरतः डिसिप्लिन की है, ना कि पनिशमेंट की-बहुत से पेरेंट्स इन दोनों को एक जैसा समझ लेते हैं। जबकि- पनिशमेंट बच्चों में डर पैदा करती है। डिसिप्लिन सही व्यवहार सिखाता है। आपका लक्ष्य बच्चे को सही तरीका सिखाना होना चाहिए, न कि उसे डराना। बच्चे की जिद को ऐसे करें हैंडल-जब बच्चा जिद करे तो पेरेंट्स का काम उसे डांटने-मारने या जिद पूरी करने की बजाय स्थिति को समझदारी से हैंडल करना है। अगर पेरेंट्स शांत रहकर कुछ आसान तरीके अपनाएं, तो बच्चे में धीरे-धीरे सुधार होगा। नीचे ग्राफिक से समझिए कि बच्चा जिद करे तो तुरंत क्या करना चाहिए- प्यार से कहें- 'पहले रो लो, फिर बात करते हैं।' बच्चे को ये मैसेज न दें- जिद = आंसू मेरी जीत, जब हम प्यार, धैर्य और स्पष्ट नियमों के साथ बच्चे को गाइड करते हैं तो वह धीरे-धीरे सही व्यवहार सीखता है। नीचे दिए गए पेरेंटिंग के कुछ गोल्डन रूल्स हैं, जो बच्चे की जिद को सही तरीके से संभालने में मदद करेंगे। बच्चे की जिद कम करने के लिए 7-दिन का एक्शन प्लान-सबसे पहले ध्यान रखें, यह कोई मैजिक नहीं है, लेकिन अगर लगातार इसे फॉलो करेंगे तो 7 दिन में फर्क दिखना शुरू हो जाएगा। पहला दिन- 'ऑब्जर्वेशन डे'-आज कुछ बदलना नहीं है, बस समझना है कि- बच्चा कब जिद करता है? किस चीज के लिए करता है? आपकी कौन-सी प्रतिक्रिया उसे और बढ़ाती है? इसे एक डायरी में नोट करें। इसका मकसद ट्रिगर को पहचानना है। दूसरा दिन- कनेक्शन बनाएं आज से कुछ एक्शनेबल काम शुरू करें। रोज 20-30 मिनट साथ में समय बिताएं। सिर्फ बच्चे के साथ खेलें। कोई मोबाइल नहीं। कोई सिखाना/डांटना नहीं। फायदा- बच्चे की अटेंशन की जरूरत पूरी होगी। जिद थोड़ी बहुत कम होगी। तीसरा दिन- स्पष्ट नियम बनाएं आज 2-3 छोटे नियम सेट करें। जैसेकि- 'दिन में 30 मिनट ही मोबाइल लेना है।' 'दिन में सिर्फ 1 ही चॉकलेट खाना है।' बच्चे को नियम के फायदे-नुकसान बताएं। शांति से बात करें। ये नियम खुद भी फॉलो करें। उसे बताएं कि ये नियम नहीं बदलेंगे। चौथा दिन- 'नहीं मतलब नहीं' आज असली टेस्ट

है। जब बच्चा जिद करे- शांत रहें। एक बार समझाएं। बार-बार रिपीट न करें। अगर रोता है- उसे रोने दें। लेकिन जिद पूरी न करें। यही सबसे बड़ा बदलाव लाएगा, पांचवां दिन- 'पॉजिटिव रीइन्फोर्समेंट' आज फोकस बदलें। गलत पर नहीं, सही पर ध्यान दें। जब बच्चा बिना जिद किए बात माने। व्यवहार में कुछ शांति दिखे। तुरंत बोलें- 'मुझे बहुत अच्छा लगा, जब आपने ऐसे बोला।' 'आप तो बहुत शांत हो गए हो।' इससे व्यवहार में पॉजिटिव बदलाव आएगा। छठा दिन- 'शांति सिखाएं' आज बच्चे को शांत होना सिखाएं। इसे खेल की तरह सिखाएं। उससे कहें- 'गहरी सांस लो, जैसे गुब्बारा फुला रहे हो।' '1-10 गिनकर सांस छोड़ो।' इससे दिमांग शांत होगा। सातवां दिन- 'रियल प्रैक्टिस डे'-अब सबकुछ साथ में लागू करें। जब बच्चा जिद करे, उससे कहें- कनेक्टः 'मुझे पता है तुम नाराज हो।' लिमिटः 'लेकिन ये अभी नहीं मिलेगा।' ध्यान भटकाएंः 'चलो ये करते हैं।' सबसे जरूरी बात- शांत रहें। आपका टोन ही बच्चे का व्यवहार तय करता है। अगर रोने के बाद मान गए तो जिद और बढ़ेगी। नोटः पहले 2-3 दिन बच्चा और ज्यादा जिद करेगा, क्योंकि उसे लगेगा कि अब तक तो रोकर काम हो जाता था। लेकिन आप टिके रहे तो 4-5 दिन में बदलाव दिखेगा और 2-4 हफ्तों में काफी फर्क महसूस होगा। 5 लाइनें, जो आपको बिल्कुल नहीं बोलनी हैं- 'तुम बहुत जिद्दी हो।' 'चुप हो जाओ वरना...।' 'तुम अच्छे बच्चे नहीं हो।' 'देखो सब लोग क्या सोचेंगे।' 'अब मैं तुमसे बात नहीं करूंगा।' ये लाइनें बच्चे के अंदर डर और गिल्ट बढ़ाती हैं। अंत में यही कहूंगी कि बच्चों की जिद कोई बड़ी समस्या नहीं है। यह उनके विकास की एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। इस समय उन्हें डांटने की बजाय धैर्य, समझदारी के साथ हैंडल करें। इससे वे धीरे-धीरे इससे बाहर निकल जाते हैं।

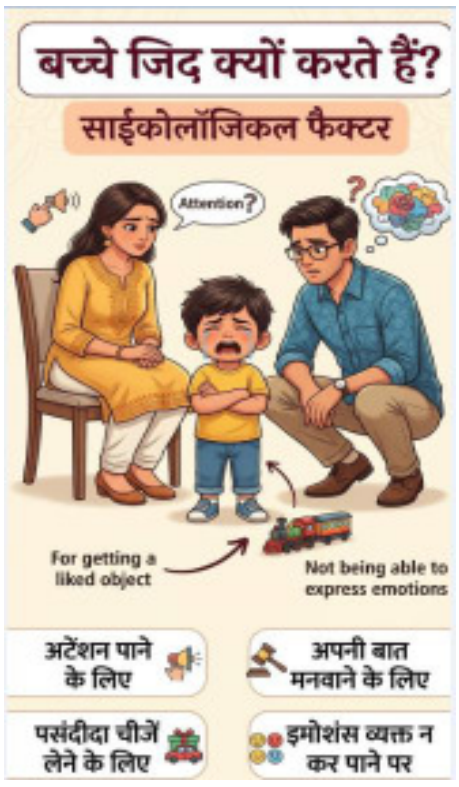

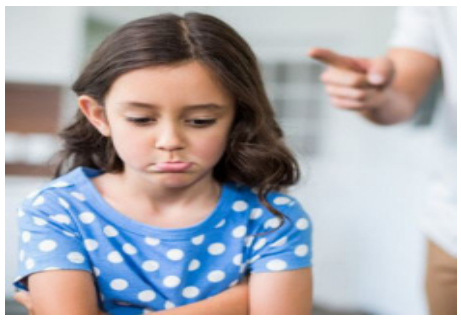

अचानक भोजपुरी क्यों गाने लगे अक्षय कुमार,अक्षरा सिंह संग नाचे, भोजपुरिया अंदाज के 2 कारण

पटना। पवन सिंह के 'आई नहीं' ने जब बॉक्स ऑफिस पर नोटों की बारिश करवाई, तो बॉलीवुड को समझ आ गया कि

सफलता का असली रास्ता यूपी-बिहार के सिंगल स्क्रीन और इंस्टाग्राम रील्स से होकर गुजरता है। यही वजह है कि अपनी हिट फिल्म के लिए तरस रहे खिलाड़ी अक्षय कुमार ने अब अक्षरा सिंह और भोजपुरी के सबसे लाउड फ्लेवर का सहारा लिया है। 'वेलकम टू द जंगल' का नया गाना रिलीज होते ही सोशल मीडिया पर बवाल काट रहा है, लेकिन इसके साथ ही एक बहस भी छिड़ गई है। सवाल-1ः अक्षरा सिंह और अक्षय कुमार का कौन सा नया गाना रिलीज हुआ है? जवाबः 25 मई को फिल्म वेलकम टू द जंगल का गाना 'घिस घिस घिस' रिलीज हो गया। सिर्फ 48 घंटे में इसे यूट्यूब पर 14 मिलियन लोगों ने देखा है। यह एक भोजपुरी गाना है, जिसमें अक्षय कुमार भोजपुरी एक्ट्रेस अक्षरा सिंह संग, वल्गर और डबल मीनिंग लिरिक्स पर थिरकते दिख रहे हैं। गाने की लिरिक्स में रगड़के नहला देब साबुन से, होंठवा पे काटे जैसे मधुमक्खी, रगड़े जवानी जैसे भर-भर के, जैसे बोल इस्तेमाल किए गए हैं। गाने को विक्रम मोन्तरोज, सुप्रिया पाठक ने आवाज दी है, जबकि इसकी लिरिक्स अभिनव शेखर ने लिखी है। सवाल-2ः क्या लगातार फ्लॉप फिल्म देने के कारण अक्षय कुमार भोजपुरी स्टार का सहारा ले रहे हैं?

जवाबः हां, काफी हद तक। अक्षय कुमार लंबे समय से एक सुपरहिट फिल्म की तलाश में हैं। उनकी इस साल रिलीज हुई फिल्म भूत बंगला बॉक्स ऑफिस पर कोई खास कमाल नहीं दिखा सकी है। इससे पहले 2025 में आईं उनकी फिल्में कनप्पा, स्काई फोर्स, हाउसफुल 5 और जॉली एलएलबी 3 भी कोई खास इम्पैक्ट नहीं छोड़ सकीं। इसलिए चर्चा है कि अक्षय कुमार अब हिट की तलाश में भोजपुरी स्टार्स और भोजपुरी गानों का सहारा ले रहे हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, फिल्म 'वेलकम टू द जंगल' में अक्षय कुमार खुद एक भोजपुरी फिल्म स्टार का किरदार निभा रहे हैं, जो ग्लोबल सिनेमा में कदम रखने की कोशिश करता है। इसी कहानी के तहत इस गाने को एक 'मेटा-पैरोडी' या 'आइटम नंबर' के रूप में शामिल किया गया है। इसके 2 कारण है- भोजपुरी का मुख्य दर्शक वर्ग उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और देश भर के प्रवासी मजदूरों का बड़ा समूह है। अक्षरा सिंह को साथ लाकर मेकर्स ने सीधे इस विशाल 'सिंगल स्क्रीन' और 'मास' ऑडियंस को टारगेट किया है, जो किसी भी मसाला कॉमेडी फिल्म को ब्लॉकबस्टर बनाने की ताकत रखती है। आज के समय में भोजपुरी गानों का हुक-स्टेप और बीट्स इंस्टाग्राम रील्स और यूट्यूब पर बहुत तेजी से ट्रेंड करता है। विक्रम मोंट्रोस द्वारा कंपोज्ड यह गाना इसी 'वायरल' फॉर्मूले को भुनाने के लिए बनाया गया है। सवाल-3ः क्या अक्षय कुमार पहले ऐसे कलाकार हैं, जिन्होंने हिट के लिए भोजपुरी स्टार और भोजपुरी गानों का सहारा लिया है?जवाबः नहीं, इससे पहले भी कई बड़े कलाकार रहे हैं, जिन्होंने समय-समय पर भोजपुरी गानों, स्टार्स या डॉयलाग/फ्लेवर का इस्तेमाल करके छप्परफाड़ कमाई की है। कुछ उदाहरण-1982 में आई नदिया के पार फिल्म। पूरी फिल्म अवधी/भोजपुरी परिवेश में थी। मुख्य भूमिका में भोजपुरी स्टार सचिन पिलगांवकर थे। यह ऑल-टाइम ब्लॉकबस्टर फिल्म है। राजश्री प्रोडक्शंस की यह फिल्म रीजनल टच के कारण ही कल्ट बनी और बाद में इसी की रीमेक 'हम आपके हैं कौन' बनी। 2003 में प्रकाश झा की गंगाजल फिल्म में मोहन जोशी और अन्य कलाकारों ने शुद्ध भोजपुरी/अंगिका लहजे के संवाद और गाली-गलौज वाले यथार्थवादी तेवर अपनाए। फिल्म कल्ट क्लासिक बनी। फिल्म के संवाद आज भी मीम्स में इस्तेमाल होते हैं। 2010 में दबंग फिल्म का चार्ट बस्टर गाना 'मुन्नी बदनाम हुई' मूल रूप से एक पुरानी भोजपुरी ट्यून से प्रेरित था।

इसके अलावा फिल्म का पूरा सेटअप भोजपुरी बेल्ट का था। सलमान खान के करियर को री-लॉन्च करने में इस गाने और देसी भोजपुरी/अवधी टोन का सबसे बड़ा हाथ था। 2012 में रिलीज हुई गैंग्स ऑफ वासेपुर पार्ट-1 और पार्ट-2 फिल्म में भोजपुरी लोकगीत 'हंटर वाली' और कई क्षेत्रीय गानों का तड़का था। यह फिल्म कल्ट हिट रही। इस फिल्म ने हिंदी सिनेमा में भोजपुरी बेल्ट के क्रूड रियलिज्म को ग्लोबल पहचान दिलाई। 2014 में आई पीके फिल्म में आमिर खान ने संवाद के लिए पूरी तरह से भोजपुरी भाषा का इस्तेमाल किया था। ऑल-टाइम ब्लॉक बस्टर रही। फिल्म ने दुनिया भर में 800 करोड़ से अधिक की कमाई की थी। भोजपुरी के सीधे और मासूम लहजे ने ही आमिर के एलियन वाले किरदार को दर्शकों से जोड़ा था। 2024 में आई स्त्री 2 फिल्म में पवन सिंह का गाया भोजपुरी पॉप गाना 'आई नहीं' काफी पसंद की गई। इस गाने ने रिलीज के बाद फिल्म की हाइप को टियर-2 और टियर-3 शहरों में इस कदर बढ़ाया कि फिल्म ने इतिहास रच दिया। फिल्म मेगा ब्लॉकबस्टर रही। 850 करोड़ से ज्यादा की कमाई की। सवाल-4ः क्या भोजपुरी अब बॉलीवुड के लिए जरूरी हो गई है? जवाबः निश्चित रूप से। पिछले कुछ सालों में बॉलीवुड का शहरी/महानगरीय कंटेंट दर्शकों से कट गया था। साउथ सिनेमा (पुष्पा, कांतारा) और भोजपुरी-अवधी बेल्ट के गानों और कंटेंट ने बॉलीवुड को अहसास कराया है कि भारत का असली पैसा 'देसी' कंटेंट में है। बॉलीवुड अब रील्स पर राज करने के लिए रीजनल स्टार्स की सोशल मीडिया फॉलोइंग का 'पैरासाइटिक इस्तेमाल' कर रहा है। बॉलीवुड को भोजपुरी की जरूरत क्यों- भोजपुरी सिनेमा को अक्सर 'कम बजट' या 'वल्गर' कहकर मुख्यधारा की मीडिया में नजरअंदाज किया जाता है, लेकिन इसकी वास्तविक ताकत इसकी जमीनी पकड़ है। दुनिया भर में भोजपुरी बोलने और समझने वालों की संख्या लगभग 25 से 30 करोड़ है। बिहार, यूपी, झारखंड के अलावा मुंबई, दिल्ली, पंजाब, गुजरात और विदेशों में (मॉरीशस, सूरीनाम, फिजी) फैले प्रवासी मजदूर इस इंडस्ट्री के सबसे बड़े फाइनेंसर हैं। भोजपुरी म्यूजिक इंडस्ट्री यूट्यूब पर दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती म्यूजिक इंडस्ट्रीज में से एक है। खेसारी लाल यादव, पवन सिंह, दिनेश लाल यादव (निरहुआ) या अक्षरा सिंह के गानों पर कुछ ही दिनों में 100 मिलियन (10 करोड़) से अधिक व्यूज आ जाना आम बात है। यूट्यूब मोनेटाइजेशन इस इंडस्ट्री की रीढ़ की हड्डी बन चुका है।

शादी और उम्र पर ट्रोल करने पर भड़कीं शमिता शेट्टी, ट्रोलर से बोलीं- शादी करके आपने क्या उखाड़ लिया

मुंबई। शिल्पा शेट्टी की बहन और एक्ट्रेस शमिता शेट्टी ने

सोशल मीडिया पर अपनी उम्र और शादी को लेकर कमेंट करने वाले ट्रोलर्स को कड़ा जवाब दिया है। इंस्टाग्राम स्टोरीज पर एक स्क्रीनशॉट शेयर करते हुए शमिता ने उन लोगों पर निशाना साधा जो सिंगल महिलाओं को ऐज-शेम करते हैं। 47 वर्षीय शमिता ने कहा कि वे शादी करने की किसी जल्दबाजी में नहीं हैं और अपनी जिंदगी में बेहद फिट और खुश हैं। उन्होंने ट्रोलर्स की पुरुष-प्रधान और पिछड़ी सोच पर आपत्ति जताते हुए उन्हें तुरंत अनफॉलो करने की सलाह दी है। कमेंट करने वाले को कहा- बदलाव प्राकृतिक है शमिता शेट्टी ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक ट्रोलर की पोस्ट का स्क्रीनशॉट शेयर किया। इसमें यूजर ने लिखा था कि आपकी उम्र हो गई है और अब पहले वाली बात नहीं रही। इस पर प्रतिक्रिया देते हुए शमिता ने लिखा, 'हां, मैं अब अलग दिखूंगी। समय के साथ चीजें बदलती हैं और यह जीवन का प्राकृतिक नियम है। शारीरिक बनावट सहित कुछ भी हमेशा के लिए एक जैसा नहीं रहता। लेकिन अपनी उम्र के हिसाब से मैं पूरी तरह स्वस्थ, फिट और खुश हूं। मेरे लिए सिर्फ यही मायने रखता है।''शादी करके आपने क्या उखाड़ लिया' यूजर ने शमिता की शादी को लेकर भी टिप्पणी की थी कि अगर समय पर शादी कर लेतीं तो आज बच्चे बड़े हो गए होते। इस पर शमिता ने तीखा पलटवार करते हुए पूछा, 'तो? आपने शादी करके क्या उखाड़ लिया है भाई? सबसे जरूरी बात यह है कि आप लोग सिंगल महिलाओं को फॉलो ही क्यों करते हैं? सिर्फ इसलिए ताकि उन्हें ऐज-शेम कर सकें और उन पर अपनी पुरुष-प्रधान और आदिमानव जैसी पिछड़ी सोच थोप सकें? कृपया मुझ पर एक अहसान करें और मुझे तुरंत अनफॉलो कर दें। बड़ी बहन शिल्पा शेट्टी से होती है तुलना शमिता शेट्टी की बड़ी बहन और बॉलीवुड एक्ट्रेस शिल्पा शेट्टी 50 साल की हैं। शिल्पा शादीशुदा हैं और उनका एक 14 साल का बेटा है। शमिता ने पहले भी कई इंटरव्यू में साफ किया है कि वे सिर्फ शादी करने के नाम पर किसी से भी शादी नहीं करना चाहतीं। वे सही समय और सही जीवनसाथी का इंतजार करने में विश्वास रखती हैं और अपनी सिंगल लाइफ को पूरी तरह से एन्जॉय कर रही हैं। फिल्में छोड़ इंटीरियर डिजाइनिंग में बनाया करियर शमिता शेट्टी ने साल 2000 में आदित्य चोपड़ा की ब्लॉकबस्टर फिल्म 'मोहब्बतें' से बॉलीवुड में डेब्यू किया था। इसके बाद उन्होंने 'जहर' (2005), 'फरेब' (2005) और 'कैश' (2007) जैसी फिल्मों में काम किया। कुछ समय बाद उन्होंने एक्टिंग से एक लंबा ब्रेक ले लिया और इंटीरियर डिजाइनिंग के क्षेत्र में अपना सफल करियर बनाया। इसके बाद उन्होंने रियलिटी शोज के जरिए दोबारा एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री में वापसी की।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक
डॉ. दीपक अरोरा
द्वारा रामा प्रिंटर्स
53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र) 211002 से मुद्रित एवं सी-41यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
संपादक/प्रकाशक
डा.पुनीत अरोरा
मो.न.09415608710
RNINO.UPHIN/2015/63398
www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी0आर0बी0 एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगा।